डाक पंजीयन संख्या: एडी.306/2003–05

R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

वर्ष 4, अंक 9, इलाहाबाद सितम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक पत्रिका

मूल्य 3 रुपये

बिजली की समस्या धीरे विकराल रुप धारण कर रही है

अटलजी को अब संन्यास ले लेना चाहिए

श्रीयुत पंडित केशरी नाथ त्रिपाठी के उनके 70वें जन्म दिवस पर

तुम सलामत रहो हज़ार बरस.......

विधि, राजनीति तथा साहित्य के त्रिवेणी पुरुष माननीय पं0 केशरी नाथ त्रिपाठी को उनके जन्म दिवस (10 नवम्बर) पर **'विश्व स्नेह समाज'** व **जी.पी.एफ. सोसायटी** परिवार की ओर से सादर मंगल–कामनाऍ और हार्दिक बधाईयॉ

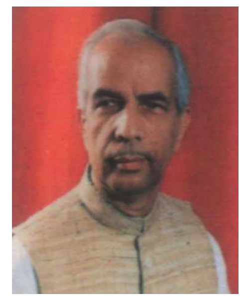

ekuuh; ia0 ds'kjh ukFk f=ikBh

अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, उत्तर प्रदेश

एवं

पूर्व विधानसभाध्यक्ष, उ.प्र.

jktk gks ;k jkuh] fi;s lc jktjkuh

राजरानी® pk;

dkgD;kpk; gsa] dkgD;k Idkn gS

1रुपये, दो रुपये 50ग्राम, 100ग्राम,250ग्राम, 500ग्राम व 1 किलोग्राम के पैक में उपलब्ध

हमारे अन्य प्रोडक्ट:

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला, राजरानी

निर्माता: श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज, इलाहाबाद

अपनी बात

वर्ष : 4, अंक : 10 नवम्बर 2004

विश्व स्नेह समाज
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः
डॉ0 कुसुमलता मिश्रा
उप संपादक
रजनीश कुमार तिवारी
विज्ञापन प्रबंधक / प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला
सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी
संयुक्त संपादक
मधुकर मिश्र
ब्युरो प्रमुखः
गिरिराजजी दूबे

पत्रव्यवहार एवं सम्पादकीय कार्यालय
: एल.आई.जी.–93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद मो0ः 0532–3155949

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

संपादक, प्रकाशक, मुद्रक जी.के.द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277 / 486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया।

मूल्य एक प्रति : 3.00रुपये
वार्षिक मूल्य : 35.00 रुपये मात्र
विशिष्ट सदस्य :
100.00रुपये मात्र
पंचवर्षिय सदस्य :
160.00 रुपये मात्र
आजीवन सदस्यः 1100.00 रुपये मात्र
संरक्षकः 5000.00 रुपये मात्र

हिन्दी को बेचारी कहना अपना उसका अपमान करना है

आजादी के 57 वर्ष बीत जाने के बाद भी भारत में हिंदी की उपेक्षा का जिम्मेदार कौन है? क्या आपने कभी सोचा? नही. आखिर हिन्दी, हिन्दुस्तान की भाषा है फिर भी सरकारी दफ्तर से लेकर प्राईवेट विभाग, स्कूलों व घरों में अंग्रेजी को वरीयता क्यों दी जाती हैं. अंग्रेजी या किसी अन्य भाषा का पढ़ना, जानकारी रखना कोई बूरी बात नहीं है लेकिन इस बिना पर नहीं कि हिन्दी की उपेक्षा की जायें.

हिंदी की उपेक्षा कहां से प्रारम्भ होती है क्या आपने सोचा? हमारे आपके घर से. बच्चें को अंग्रेजी की कविता सुनाने पर, अंग्रेजी के शब्द प्रयोग करने पर, अंग्रेजी माध्यम के स्कूल / कॉलेज में पढ़ने पर वाहवाही मिलती है और हिंदी माध्यम व कविता का पाठ करने वाले छात्रों को उपेक्षा का शिकार होना पड़ता हैं. हिंदी की याद हमें केवल 14 सितम्बर को ही आती हैं. इससे बड़ी हिंदी की दुर्गती क्या हो सकती है कि हम हिन्दी भाषी होते हुए भी हिदीं दिवस, हिन्दी पखवारा मनाते हैं

आपको एक सरकारी दफ्तर में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के बारे में ऑखों देखी बताना चाहुँगा. समारोह प्रारम्भ हुआ. सबने अपनी–अपनी बात रक्खी, सबने आगे अपने कार्य में हिन्दी अपनाने की संकल्प लेने की बात की तो किसी ने कविता सुनायी, किसी ने ग़ज़ल. इसी बीच एक सज्जन ने हिन्दी फिल्म के गाने सुनाने प्रारम्भ कर दिये. कुछ लोग भड़क गये. यह फिल्मी गाने का कार्यक्रम नहीं है. लेकिन जानकारी के लिए एक बात बता दूँ हिन्दी फिल्मी गानो ने हिंदी को सबसे अधिक बढ़ावा दिया हैं. आज देश के कोने–कोने में हिंदी फिल्मी के गाने बजते हुए व लोगों को गुनगुनाते हुए सुना जाता है. भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भारतीय हिन्दी फिल्मों के गाने बजते व गुनगुनाते सुने जा सकते हैं. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विभागायुक्त महोदय थोड़ा देर से आये. उनका आतिथ्य भाषण प्रारम्भ हुआ–"डियर हिदीं प्रेमियों, आज हम लोग हिदी दिवस के अवसर पर इसलिए इकट्ठा हुए हम आज यह ओथ ले कि हम अपने आफिस के कार्यो में मैक्सिम हिदी का प्रयोग करेंगे. हिन्दी हमारी अपनी राष्ट्रभाषा हैं. इसका यूज हमें डेली लाइफ में करना चाहिए. धन्यबाद." यह था हिदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के भाषण का मुख्य अंश. अगर ऐसे ही हिदी दिवस मनाया जाता है तो इसके मनाने का क्या औचित्य है. बस पैसा खर्च कराने के लिए हिदी दिवस मनाया जाता है.

जय हिंदी जय हिन्दूस्तान

जी.के.द्विवेदी
प्रधान सम्पादक

आपके विचार स्नेह के साथ

बहुत प्रशंसा सुनी है

महोदय जी नमस्ते

आपकी पत्रिका की विशेष प्रशंसा सुन कर यह हमारी संस्था आपकी पत्रिका मंगवाने की इच्छुक है. नमूने का अंक नहीं देखने तथा चन्दे की दर से अनभिज्ञ होने के कारण पत्रिका की एक प्रति मंगवाने को मजबूर हूँ. कृपया पत्र पाते ही अपनी पत्रिका की एक प्रति हमारे संस्था के नाम अवलोकनार्थ भेज दें. पत्रिका आते ही चन्दा भेज दिया जाएगा. **द्वारिका प्रसाद**, जनराम सिंह शिक्षा संस्थान,दरुअरा, नालंदा, बिहार

अगला विश्व युद्ध जल के लिए ही होगा.

आदरणीय भाई द्विवेदी जी नमस्कार

मेरी कहॉनी 'अंधेरे में उजाला' को स्थान देने के लिए धन्यबाद।

अपनी बात में आपने पानी की समस्या पर प्रकाश डाला है, उस पर नेताओं को गम्भीरता से सोचना चाहिए. जल एक ऐसी ज्वलंत समस्या बनती जा रही है जो भविष्य में कदापि सारे विश्व को जला दें. विशेषज्ञों का तो यहां तक मानना है कि अगला विश्व युद्ध जल के लिए ही होगा.

यदि हम अपने ही देश/परिवेश में देखें तो लगता है मानव–विचार इतना संकुचित होता जा रहा है कि वह पहले अपने को गले तक जल में डूबा देखना चाहता है, भले ही पड़ोसी प्यासा मर रहा हो! पंजाब और कर्नाटक इस संकुचित विचार के सटीक उदारहण हैं. जब हमारे नेताओं की ऐसी मानसिकता है तो आम जनता इस मानसिकता में बहेगी ही. देश की नदियों को जोड़ने की मुहीम भी अब राजनीति की फॉसी पर झूल रही है, जिसका परिणाम आम नागरिक को भविष्य में भुगतना पड़ेगा. ऐसे में हर गम्भीर पत्रकार का कर्तव्य बनता है कि इस मुद्दे को उजागर करें ताकि हमारे नेताओं के कान में कम से कम जूं तो रेंगें. शुभकामनाओं सहित

चंद्र मौलेश्वर प्रसाद, यंशवत भवन, अलवाल, सिंकदराबाद, आध्रप्रदेश, 500010

पत्रिका उत्कृष्ट संपूर्ण सामग्री युक्त हैं.

प्रतिष्ठार्थ,सम्मानीय संपादक महोदय जी

शुभकमानाओं सहित अभिवादन

स्नेह समाज का अंक मिला धन्यबाद, पत्रिका उत्कृष्ट संपूर्ण सामग्री युक्त हैं. कृपया बधाई स्वीकारें.प्रकाशन सामग्री भेजना चाहता हुं कृपया स्वीकृति प्रदान करें. **विशाल शुक्ल**

शुक्ल निवास, रेलवे स्टेशन, छिन्दवाणा, मं0प्र0

क्या पत्रिका नियमित छपती है

सादर प्रणाम दीदी!

आपकी मासिक पत्रिका का अक्टूबर 2003 का अंक आज मिला जबकि इसके बाद के अंक भी छप गए होंगें. यदि आपकी यह पत्रिका नियमित छपती हो तो हम भी नैणसी आपको नियमित भेजते रहेंगें. **अम्बू शर्मा**, सम्पादक, नैणसी, 206, एस.के. देव रोड, लेक टाउन, कोलकाता–700048

इतनी कम कीमत में इतनी अच्छी पत्रिका

श्रद्धेय द्विवेदी जी, सादर नमन

आशा है सपरिवार सानन्द होंगें. आप द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह का अंक मिला. अच्छा लगा. इतनी कम कीमत में इ तनी अच्छी पत्रिका प्रकाशित की हैं. बधाई के पात्र हैं. आपसे यह मेरा पहला सम्पर्क हैं. आपको रचनात्मक सहयोग मिलता रहेगा. अगर आप चाहेंगे तो समयानुसार इस क्षेत्र के संवाद भी भेज देंगें. तत्काल एक लेख पत्रकारिता एवं हिन्दी सेवा विशेषांक के लिए भेज रहा हूँ. आशा है आपका आशीर्वाद मिलेगा. मंगलकामना के साथ. आपका **भावुक जी द्विवेदी**(डॉ. अंजनी कुमार दुबे') प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, नेहरु कॉलेज, पैलापुल, जिला–कछार, असम, 788698

पत्रिका काफी अच्छी लगी

आदरणीय, द्विवेदी जी, सादर सप्रेम नमन्, आज ही आपकी सम्मानित पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का सितम्बर अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका अवलोकन के उपरान्त काफी अच्छी लगी विशेष कर श्री राही अलबेला का लेख अटल जी को अब सन्यांस ले लेना चाहिए कटु सत्य के साथ सच्चाई से ओत–प्रोत हैं. लेखक का विचार वास्तव में सराहनीय है परन्तु साथ ही एक सच्चाई यह भी है कि राजनीति किसी को सन्यास लेने नहीं देती हैं. जहां तक मेरी याददास्त है तो भारत में अभी तक ऐसा कोई उदाहरण नजर नहीं आता है फिलहाल मेरी ईश्वर से यही कामना है कि अटलजी के साथ ही सभी राजनेताओं को सद्बुद्धि दे कि वह देश के प्रति भी कुछ सोचे श्रीमान जी मुझे आपकी पत्रकारिता विशेषांक अंक नहीं प्राप्त हो सका है यदि संभव हो तो उक्त अंक की प्रति भेजने की कृपा करें. धन्यबाद सहित.

शरद कपूर, खैराबाद, सीतापुर, उ.प्र.

बहुत खुशी हुई उत्कृष्ट पत्रिका का परिचय पाकर

आदरणीय श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी, सादर नमस्कार

मासिक लोकयज्ञ में आपकी पत्रिका

'विश्व स्नेह समाज' की समीक्षा पढ़ी, खुशी हुई. उत्कृष्ट पत्रिका का परिचय पाकर, मैं हिन्दी साहित्य की शीर्ष पत्र–पत्रिकाओं में विगत दो दशकों से प्रकाशित हो रहा हूँ. हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधा में लिखता हूँ. आपकी पत्रिका से भी जुड़ना चाहता हूँ. कृपया अपनी पत्रिका का एक अंक मानद अंक प्रेषित कर कृतार्थ करें. ससम्मान

/kU;okn- डॉ. सुनील कुमार अग्रवाल
स्वप्निल सदन, रानी बाग, सुभाष रोड, चंदौसी, मुरादाबाद, उ.प्र. 202412

तीन रुपयें में पत्रिका निकालकर हिन्दी भाषा के विकास में योगदान दे रहे हैं

माननीय द्विवेदी जी, सादर नमस्कार लोकयज्ञ में 'विश्व स्नेह समाज' की समीक्षा पढ़ मन हर्षित हुआ. साहित्यिक भूमि इलाहाबाद से इतने कम मूल्य की पुस्तक निकाल कर, हिन्दी भाषा के विकास में आपके अमूल्य योगदान के लिए साधूवाद. मैं भी एक कवि हूँ. मेरी कविता कादम्बिनी, समय सुरभि, सहित कई क्षेत्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं. कहानी संग्रह में शीघ्र ही कहानी प्रकाशित होने जा रही हैं. मैं आपकी पत्रिका से जूड़ना चाहता हूँ. अतः पत्र के माध्यम से हमें सूचित करें कि यह कैसे संभव होगा. एक पत्रिका भेजने की कृपा करें.

प्रदीप कुमार चित्रांशी,बी.110, संचार विहार, आई.टी.आई. कॉलोनी, मनकापुर, गोण्डा–08

कृपया सदस्यता शुल्क बतायें

आदरणीय द्विवेदी जी, सादर वंदे।
आपकी पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' की विचारधारा एवं रचना पसंदगी जानना चाहता हूँ. पत्रिका का कोई भी अंक अवलोकनार्थ प्रेषित करने की कृपा करें, ताकि पत्रिका के अनुरुप रचनाएं प्रकाशनार्थ प्रेषित की जा सके. सदस्यता शुल्क भी बताने की कृपा करें. रचनाएं टंकित अथवा हस्तलिखित किस रुप में स्वीकार्य है? शुल्क भेजने का माध्यम भी बताएं. आपके बहुमूल्य सुझावों, विचारों की प्रतीक्षा रहेगी. सादर सहित. **घवेन्द्र सिंह**
1847, विवेक नगर, चांदपुर, 246725

माननीय द्विवेदी जी, सादर अभिवादन, कृपया हमें विश्व स्नेह समाज' मासिक की एक प्रति अवलोकनार्थ भेजें.
श्यामसुन्दर 'सुमन', बी–320, सुभाषनगर, भीलवाडा, 311001

लोगों के दिमाग में छा गई है विश्व स्नेह समाज

सेवा में, संपादक महोदय,
आपके द्वारा प्रकाशित हिन्दी मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज बरहज, देवरिया में लोगों के दिमाग में पूरी तरह छा गई हैं. उन्हें बस यही इंतजार रहता है कि अगला अंक कब आयेगा. पत्रिका में फिल्मी दुनिया खेल–खिलाड़ी में क्रिकेट के बारे में जानकारी दीजिए और प्रश्न पूछे और पन्ना बढ़ा दे तो पत्रिका में और जान आ जाएगी. इस पर विचार करें.

मेरा रात तेरे दिन से अच्छा होगा
मेरा इकरार तेरे इनकार से अच्छा होगा
अगर तुम्हें मालूम नहीं तो घुघट हटा के देखें
मेरा जनाजा तेरे बारात से अच्छा होगा

सौरभ तिवारी पुत्र श्री राकेश तिवारी, खेतान हाउस, आजाद नगर, दक्षिणी बरहज, देवरिया

आलेख प्रकाशन करके अपना उदार सहयोग करें

मान्यवर सम्पादक जी,
हिन्दी के यशस्वी कवि, नाटकार एवं आलोचक डॉ0 रामकुमार वर्मा की जन्मशती 15 सितम्बर, 2004 की राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की योजना है. स्वर्गीय डॉ0 वर्मा की साहित्य सेवा का समाकलन, प्रख्यात समीक्षक डॉ. राजेन्द्र कुमार, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने किया है. डॉ. रामकुमार वर्मा जन्मशती के उपलक्ष्य में आपके सम्मानित पत्र में प्रकाशनार्थ उसे भेजा जा रहा है.
विश्वास है 15 सितम्बर 02, ई. के अंक में संलग्न आलेख का प्रकाशन करके आप अपना उदार सहयोग इस जन्मशती के समायोजन में अवश्य प्रदान करेंगें.
सहयोग के लिए आभार सहित
हरिमोहन मालवीय, अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, राजर्षी टण्डन भवन, 12 डी, कमला नेहरु मार्ग, इलाहाबादा–211001, उ.प्र.

अवश्य ही साहित्य जगत में एक पहचान कायम होगी इसकी

महोदय, आप द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज का एक मिला. छोटा, लेकिन रंगीन साज–सज्जा अच्छे आवरण में लिपटा अच्छा लगा. छोटा अवश्य है अंक पर समुचित सामग्री से परिपूर्ण हैं. जिस तरह से आपने कम समय में पत्रिका को साज–सज्जा से स्वरुप दिया है अवश्य ही एक पहचान कायम होगी साहित्य जगत में. समसामयिक गतिविधियां, समाचार, साहित्यिक सामग्री सभी तो है. यह आपके भागीरथ प्रयासों का ही कमाल हैं.साधुवाद. मैंने सुना है कि आपका सितम्बर अंक हिन्दी सेवी अंक हैं. मैं हिंदी पर एक आलेख प्रेषित कर रहा हूँ, स्वीकारें.
रितेश अग्रवाल,11/500, मालवीय नगर, रायपुर, 302017

डॉ. राजकुमारी शर्मा की गज़ल के कुछ शेर बहुत ही अच्छे

आदरणीय श्री द्विवेदी जी
आपके द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त हुआ.आभार. संपादकीय से आपके सामाजिक सरोकार एवं प्रतिबद्धता का पता चलता हैं. राजनैतिक आलेख, पत्रिका की नीति को प्रतिबिंबित करते हैं. पत्रकारिता के क्षेत्र में आजकल स्वतंत्र सोच का बड़ा अकाल हैं. हर कोई किसी धड़े से लिपटा उसका ही यशोगान करता हैं.
अभिनव ओझा की गिद्ध अच्छी लगी. यह कहानी बहुत से सवाल खड़े करती हैं. राजनैतिक भी, सामाजिक भी. डॉ. राज की गज़ल के कुछ शेर बहुत ही अच्छे लगे. आशा है, अब तक पत्रिका में और निखार आ गया होगा. **आनन्द बिल्थर**
प्रेमनगर, बालाघाट, 481001, म.प्र.

कविता छापने हेतु आपको बहुत–2 धन्यबाद.

श्रीमान जी.के.द्विवेदीजी ,सादर नमस्कार मुझे आपके द्वारा भेजी गयी पत्रिका प्राप्त हो गयी हैं. कविता छापने हेतु आपको बहुत–2 धन्यबाद.
इस बार मैं आपके पास अपनी दूसरी रचना भेज रही हुं.
सुधा मिश्रा, नवरंग संगीत शिक्षा कल्याण समिति, 29, त्रिवेणी नगर, नैनी, इलाहाबाद

पाठकों से यह विनम्र निवेदन है कि पत्रिका उनको कैसी लगी. हमें अपनी क्रिया प्रतिक्रिया से अवगत कराते रहे. धन्यबाद

मुलायम से हारी जनता मायावती को पुकारी

राही अलबेला

अभी मात्र एक साल पहले की ही तो बात है जब नौकरशाही निवर्तमान मुख्यमंत्री से त्रस्त हो चुकी थी. वह अंदर ही अंदर बहन सुश्री मायावती को कुर्सी से उतरना देखना चाह रही थी. आम जन के सेहत पर कोई खास फर्क नहीं था. फर्क था तो सिर्फ सरकारी मुलाजिमों से जुड़े परिवारों को तथा दूसरे समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव को. जो बार–बार कुर्सी को पाने के लिए हाथ–पॉव मार रहे थे. मगर बहन जी उनकी चाल को हर बार अपने तुरुप के पत्ते से बेनकाब कर दे रही थी. ऐसा मेरा कहना नहीं कि बहन जी से आम जन बिल्कुल भी नाराज नहीं था. आम जन खुश नहीं थे, तो उसका मुख्य कारण था कि व्यक्तिगत स्वार्थो के कारण कुछ लोगों को फॅसाने के कारण और दूसरा कारण था कि वे केवल अम्बेडकर ग्राम पर ही ध्यान केन्द्रित कर रही थी. उन्हें अन्य वर्ग से कोई खास मतलब नहीं था गत वर्ष ताज कॉरिडोर मामले ने बहन जी को हिला दिया कुर्सी हाथ से निकल गयी. भाई मुलायम सिंह ने एक बार और हाथ मारा और इस बार उनकी गोट भाई अमर सिंह के डॉलर से मुलायम सिह की समाजवादी पार्टी की सरकार बन ही गई. पूर्व की भॉति ही बसपा के विधायक सपा के खेमें में शामिल हो गये और उन्हें लाल बत्ती से नवाजा गया. रहीं सही कसर कुछ निर्दल व कांग्रेस पार्टी ने बाहर से समर्थन देकर पूरी कर दी. चारों तरफ मिठाईया बॉटी गयी, खुशियॉ मनायी गयी. बिजली की व्यवस्था एक हफ्ते के अंदर सुध ाार लिया जाएगा, छात्रसंघ बहाल कर दिया गया, स्वकेन्द्र परीक्षा प्रणाली दूबारा लागू कर दी गयी, इंटर पास गरीब लड़कियों को बीस हजार रुपये छात्रवृत्ति देने सहित अनगिनत लोकलुभावन घोषणाएं की गयी. शायद ये लोकलुभावन नारें लोकसभा चुनाव की तैयारी थे. मुलायम सिंह को लोकसभाा चुनाव में उनकी तैयारी का नतीजा भी मिल गया. मगर अफसोस उनकी खिचड़ी नहीं पक सकी. धीरे–धीरे कुर्सी संभाले एक वर्ष बीत गये. मगर नौकरशाही, सरकारी मुलाजिम और आमजन जो मायावती को भला बुरा कहते थे पहले तो दबे मन से मगर अब तो खुलेआम कहने लगे हैं कि मायावती की सरकार ही अच्छी थी.

15 मई 2004 से 25 सितंम्बर 2004 केवल इलाहाबाद जिले में हुई कुछ मुख्य वारदातें

वैसे वारदातों का प्रतिदिन राज्य के किसी न किसी कोने में होना आम बात हो गई. कही अपहरण, लूट, दंगा, कत्ल. मगर पूरे राज्य पर अगर जानकारी इकट्ठा की जाएगी तो शायद इस पत्र में छापने को भी जगह न मिल पायें. मुखड़े के तौर पर केवल इलाहाबाद जिले को हम ले रहे हैं.

- 18 मई की रात खीरी में पेट्रोल पंम से 95 हजार से लूटे
- 12 जून को पश्चिम शरीरा में गार्ड की हत्या, बंदूक और नगदी लूट
- आठ अगस्त का हंडिया में एल आई सी कर्मी को कत0ल कर 2.54 लाख लूटे
- 10 सितंबर की रात झूंसी में चरवाहे का गला घोंटकर भेड़े खोल ले गए.
- 24 सितंबर प्रीती हॉस्पीटल से घर जाते समय डॉ. कार्तिकेय शर्मा का अपहरण

अमिताभ बच्चन के 62 वें जन्म दिवस पर विशेष

bykgkcknch tkugks rqe

✍दर्दे दिल राज

करोड़ो दिलों की धड़कन,
हिन्दुस्तान की शान हो तुम।
गज़ब की आवाज में कशिश,
इलाहाबाद की जान हो तुम।
नाम रोशन इलाहाबाद का जिससे,
बस वही गुलिस्ताना हो तुम।
अभिषेक के पिता स्व. हरिवंश राय,
की होनहार संतान हो तुम।
तुला राशि तुम्हारी किस्मत के,
बड़े ही धनवान हो तुम।
11 अक्टूबर 1942 प्रातः 4 बजे धरती,
मां पर आये जो वो इंन्सा हो तुम।
3 जून 1973 विवाह बन्धन में बंधे,
जया बच्चन की पहचान हो तुम।
16 फरवरी 1969 में साइन सात हिन्दुस्तानी,
आज कला की मिसाल हो तुम।
नं0 वन कुर्सी पर राज किया जो,
अभिनेता इलाहाबादी वो महान हो तुम।
6 फिट 3 इंच ऊंचाई मशहूर लोगों,
की जुवां पर लम्बू नाम हो तुम।
कमला नेहरु में पैदाइश मां तेजी,
बच्चन की तेजस्व का ही प्रताप हो तुम।
बड़ी बाखूबी से हर किरदार अदा करना,
कलात्मक जीवन की बुनियाद हो तुम।
फर्क है, दर्दे दिल, को जिसके लिए कला,
कार नहीं खुद ही एक हिन्दुस्तान हो तुम।

निवेदन

विश्व स्नेह समाज के पाठकों से अनुरोध है कि वे पत्रिका के वार्षिक/आजीवन/संरक्षक सदस्य बनें.

संपादक

सेवा में.
प्रधान संपादक
हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज'
एल.आई.जी–93, नीम सराय
कॉलोनी मुण्डेरा, इलाहाबाद

मैं विश्व स्नेह समाज पत्रिका निम्न चिह्नांकित सदस्यता हेतु इच्छुक हूँ वॉछित राशि नगद/बैंक ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम से प्रेषित कर रहा हुं.

0 वार्षिक : रु0 35.00 0 विशिष्ट सदस्यः रु0 100.00
0 पंचवर्षीय सदस्यः रु0 165.00 0 आजीवन सदस्य : रु0 1100.00
0 सरंक्षक : रु0 500.00

नाम :..
निवास का पूर्ण पताः ....
पिन कोडः..........................प्रदेश ....

सदस्य के हस्ताक्षर

नोटः1. आजीवन व संरक्षक सदस्यों का सचित्र परिचय प्रकाशित किया जाता हैं.
2. आजीवन व संरक्षक सदस्यता शुल्क के साथ अपने पासपोर्ट साइज चित्र तथा संक्षिप्त परिचय अवश्य भेजें.

Lora=rk,oa fgUnh Hkk"kk vkanksyu dk lk{kh fgUnh lkfgR; lEesyu

जन्मशती, 15 सितम्बर 2004 पर विशेष

प्रख्यात कवि एवं नाटकाकरडॉ0 रामकुमार वर्मा

✍प्रो0 डॉ0 राजेन्द्र कुमार

आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में द्विवेदी युग के बाद का परिदृश्य विशेष उल्लेखनीय हैं. इस परिदृश्य में हिन्दी भाषा और साहित्य को रामकुमार जी के रुप में एक ऐसी उदीयमान प्रतिभा के दर्शन हुए जो अपनी सृजनात्मक क्षमता और सक्रियताओं में पर्याप्त आश्वस्तिकारी थी. रामकुमार जी का जन्म 15 सितम्बर 1904 को हुआ था. तदनुसार हिन्दी जगत 15 सितम्बर 2004 से 15 सितम्बर 2005 तक उनका शताब्दी वर्ष मनाने की तैयारी में हैं. आशा की जानी चाहिए कि शताब्दी वर्ष के इस अवसर का सार्थक उपयोग डॉ0 वर्मा के बहुमुखी और गतिशील व्यक्तित्व के सम्यक् मूल्याकंन और आंकलन के लिए किया जा सकेगा.

डॉ0 वर्मा सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में सबसे पहले एक कवि के रुप में सन् 1922 में उपस्थित हुए थे. वे दिन थे, जब महात्मा गॉधी के नेतृत्व में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय आंदोलन अपने पूरे उठान पर था और साथ ही हिन्दी लेखकों पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणाओं का जादू अभी भी चल रहा था. ये दोनों तथ्य अपने प्रवृतयात्मक रुप में रामकुमार जी के व्यक्तित्व को निर्मित करने तथा उसे विकसित करने में उल्लेखनीय योग देने वाले साबित हुए. रामकुमार जी उन दिनों दसवी कक्षा के छात्र थे. महात्मा गॉधी के आवाहन पर उन्होंने अपने अध्ययन को स्थगित करके असहयोग आदोलन में सक्रिय भाग लेना आरम्भ कर दिया. उन्हीं दिनों गांधीगान शीर्षक से उन्होंने अपनी पहली कविता लिखी और प्रभात फेरियों में राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत गीतों को गाते हुए अपने उत्साह की अभिव्यक्ति की. 1923 में वीर हमीर नामक काव्य–कृति के प्रकाशित होते ही हिन्दी कविता के क्षेत्र में उन्हें अपनी पहचान मिली. इस तरह द्विवेदी युगीन आदर्शवाद से उत्प्रेरित होते हुए वे उठे और आगे चलकर छायावाद के प्रभाव के अंतर्गत कवि के रुप में अपने विकास को प्राप्त हुए. उनका व्यक्तित्व द्विवेदीयुग और छायावाद युग दोनों की प्रवृत्तियों के सम्मिश्रण से निर्मित था. एक प्रकार से उनके रचनात्मक व्यक्तित्व में द्विवेदीयुग और छायावादी प्रवृत्तियों के बीच बराबर एक संतुलन बनाये रखने का प्रयत्न मिलता हैं. उनकी कुछ प्रसिद्ध काव्य–कृतियों के नाम है–वीर हमीर, चित्तौड़ की चिता, अंजलि, एकलव्य, उत्तरायण और ओ अहल्या आदि.

एक नाटक लेखक के रुप में भी डॉ. रामकुमार वर्मा की लोकप्रियता बहुत से लेखकों के लिए स्पृहा का विषय रही है।

पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ0 रामकुमार वर्मा की प्रथम कविता 1922

जिस भारत की धूल लगी है मेरे तन में,
क्या मैं उसको कभी भूल सकता जीवन में?
चाहे घर में रहूँ, रहूँ अथवा मैं वन में
पर मेरा मन लगा हुआ है इसी वतन में,
सेवा करना देश की, यही एक सन्देश हैं।
मैं भारत का हूँ सदा, भारत मेरा देश हैं.

पारदर्शी–कुण्डली

आधी जनता वोट दे, आधी रहती मौन।
चौथाई की जीत को, बहुमत माने कौन।।
बहुमत माने कौन, अल्पमत की सरकारें।
जोड़े नेता भानुमति सा कुनबा प्यारे।।
पॉच साल में पेंशन और बनाते चॉदी।
देखें पारदर्शी, तमाशा जनता आधी।।

ॐ पारदर्शी
पारदर्शी साधना केन्द्र, 261, उत्तरी आयड़, उदयपुर, 313001

fgUnh i=dkfjrkdkLo:i

डॉ0 चन्द्रावती सिंह

पत्रकारिता साहित्य की एक सशक्त विधा है–देखा जाय तो इसका विकास भरतेन्दु हरिश्चन्द्र के द्वारा प्रारम्भ किया गया–वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे– देश की गुलामीं उनके हर साहित्यिक रचनाओं में परिलक्षित होती है. कदाचित इसी प्रेरणा ने उन्हें अपने विचारों के प्रकटी करण हेतु उनकी पत्रिका 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन हिन्दी पत्रकारिता के युग का शुभारम्भ है–उनकी अल्पकालीन साधना हिन्दी साहित्य व इसकी पत्रकारिता के इतिहास में अजर अमर है–विभिन्न सामाजिक आन्दोलनों ने भारतीय चिन्तन धारा को देश और उसकी संस्कृति के प्रति नयी चेतना उत्पन्न की इसमें ब्रहम समाज और आर्य समाज का विशष योगदान है. पत्रकारिता का रूप उस समय देश को अग्रेजों की गुलामी के प्रति जागरूकता पैदा करना था. अतः बहुत से समाचारपत्र सरकार के कोप भाजन हुये और उन्हे बन्द करना पड़ा–पत्रकार अपने आदर्शो के प्रति समर्पित थे. अब वह कहॉ देखने को मिलता है–

1885 में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो गई एवं स्वदेशी आन्दोलन आदि राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं ने पत्रकारिता के विविध आयामों को अपना क्षेत्र बनाया. महान कथाकार प्रेमचन्द्र ने अपनी प्रथम हिन्दी रचना 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित किया. 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता की जो सेवा की है उसका उदाहरण अन्यत्रा मिलना कठिन है.

हिन्दी भाषी अंचल के परे भी उड़ीसा, गुजरात, जम्मू–काश्मीर हरियाणा आदि प्रदेशों में हिन्दी के पत्रों का प्रकाशन हुआ–महात्मा गॉधी का 'हरिजन' प्रमुख पत्र रहा–इसमें वे अपने पाठकों की राय भी लेते रहते थे–स्वाधीनता के पश्चात भारत वासियों के मन में साहित्य एवं अन्य क्षेत्रों में नवीन आकाक्षाओ का होना स्वाभाविक था पत्रकारिता का दायरा स्वभावतः विस्तृत हो गया 'आज' के सम्पादक बावू राव विष्णु पराडकर, माखन लाल चतुर्वेदी, रामवृक्ष वेनीपुरी, श्रीनाथ सिंह, बाल कृष्ण शर्मा नवीन आदि अनेकों पत्रकारों ने स्वतंत्र भारत के स्वरूप को साकार करने के लिए कितनी बार लाठियॉ खाई, जेल गये परन्तु अपना मार्ग नहीं बदला, अडिग रहे धैर्य नहीं त्यागा ऐसे व्यक्ति अभिनन्दनीय हैं.

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पत्रकारिता का विस्तार तो हुआ किन्तु स्पष्ट लक्ष्य का बोध नहीं रहा. पत्रकारिता भटक गई. गांधी जी के पश्चात् देश को कुछ मौलिक विचारों को रखने वाली 'भूदान यज्ञ' 'राष्ट्रभारती' 'मद्य निषेध' आदि पत्रिकायें प्रमुख थी– सर्वोदय विचार धारा के संवाहक इन पत्रों निर्वल और असहाय लोगों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी– ये पत्रिकाये दुखी और दीन व्यक्तियों की वैसाखी सिद्ध हुई. सर्वोदय विचारों को प्रसारित करने वाली विनोवा भावे के ब्रह्मविद्या 'मंदिर' से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'मैत्री. इस पत्रिका की विशेषता यह थी कि इसमें काम करने वाली सभी महिलायें थी. यह एक क्रान्तिकारी दृष्टिकोण था. पत्रिका के लेख सुरूचि पूर्ण तथा सत्य का प्रति पादन करने वाले होते थे. मनगठन्त, कपोल कल्पित समाचारों का त्याग सर्व हितकारी विचारों का सहज सरल भाषा में प्रस्तुति करना. इसकी विशेषता था– आज जबकि पत्रकारिता इतनी उन्नत हो चुकी है महिला पत्रकारों का अभाव खलता है. इस दिशा में उन्हें आगे आना चाहिए स्वस्थ पत्रकारिता का स्परूप आगे आने की संभावना उन्हों के द्वारा सम्भव है. राजघाट वाराणासी से सर्वोदय जगत भी निष्पक्ष भाव से आलोचनात्मक दृष्टिकोण देता है कु0 निर्मला देशपाडें, विमला आदि लेखिकायें मौलिक भावों का प्रकाशन करती हैं.

टाइम्स आफ इंडिया ग्रुप की 'वामा' विचार शील महिलाओं की विशिष्ट पत्रिका है. मृणाल पांडें इसकी सम्पादक हैं और विविध उपयोगी विषयों पर इसमें लेख भी रहते हैं. ऐसी अन्य पत्रिकायें भी होनी चाहिए जिसमें स्त्रियों के दुख–दर्द और उत्पीड़न के विरूद्ध आक्रामक दृष्टि कोण हो 'आरक्षण' के नाम से राजनैतिक नेताओं की सहमति नहीं है क्या संविधान द्वारा यही समान अधिकार दिया गया है? इन सवं मुद्दों पर महिला के अतिरिक्त पुरुष प्रधान समाज से आशा करना व्यर्थ है.

हिन्दी किसी क्षेत्र की नहीं, वरन पूरे राष्ट्र की भाषा है. इसका सम्मान करें.

Hkkjrh; izsl% leL;k,sa vkSj pqukSfr;k

✍डा. भुवनेश्वर सिंह गहलौत

आधुनिक भारतीय समाचार–पत्र जगत दो सौ वर्ष से अधिक पुराना हो चुका है. आजादी के बाद से देश में समाचारपत्र–पत्रिकाओं में आमूल परिवर्तन हुये है. भारत में प्रेस ने संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों ही दृष्टि से प्रगति की है, किन्तु देश की आवश्यकताओं को देखते हुए यह प्रगति अपर्याप्त तथा काफी पीछे है.

भारत में समाचार का प्रकाशन आरंभ करना जितना कठिन है उससे कहीं अधिक कठिन है उसे जारी रख पाना. अधिकतर समाचारपत्र व्यक्तिगत समूहों द्वारा नियंत्रित किये जाते है, उनकी संपादकीय नीतियां प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से व्यावसायिक हितों से प्रभावित होती हैं. यही हाल कमोबेश इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का है. आकाशवाणी और दूरदर्शन 'जहां न कहने की छूट नहीं वहां हा' की उक्ति से प्रभावित हैं. हमारे देश में सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों कुल मिलाकर ऐसी हैं जिसमें मध्यम श्रेणी तथा छोटे अखबार निकालना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है. ऐसे समाचारपत्रों की संपादकीय नीतियें भी इतनी सशक्त नहीं होती कि वे पाठकों को जागरूक बना सकें और विशिष्ट सामाजिक समस्याओं के बारे में जन–चेतना की एक लहरन–सी पैदा कर सकें विज्ञापन और अन्य संसाधनों के अभाव में अखबारों को अपने ही गुणवत्ता कायम रख पाना मुश्किल हो जाता है. हमारे देश में बड़े अखबार, मध्यम श्रेणी और छोटे अखबार के लागत से कम मूल्य रखकर वे घाटे की भरपाई विज्ञापन से कर लेते हैं किन्तु इसका खामियाजा मध्यम श्रेणी और छोटे अखबारों को भुगतना पड़ता है. वे चाहकर भी मूल्य कम नहीं कर सकते. इस कारण उनकी होड़ मैं टिके रहना मुश्किल हो जाता है. राष्टीय अखबारों को क्षेत्रीय अखबारों से प्रायः कड़ी चुनौती मिलती है, लेकिन क्षत्रिय अखबार और तमाम बातों में उनसे पिछड़ जाते हैं. 1940 में इंडियन न्यूजपेपर सोसायटी के केवल 14सदस्य थे, आज उनकी संख्या बढ़कर 800 के करीब हो गयी है. देश में औसतन 20 प्रतियां ही प्रति हजार व्यक्तियों तक पहुंच पाती हैं जबकि विकसित देशों में यह कम से कम औसत संख्या 135 के करीब है.

अखबारी कागज पर अब भी सरकार का नियंत्रण है। पिछले दस वर्षो में अखबार का मूल्य नहीं बढ़ा जबकि अखबारी कागज का मूल्य आसमान छूने लगा. इससे भी मध्यम और छोटे अखबारों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है. अपने संसाधन बढ़ाने के लिए उन्हें कई तरह के समझौते करने पड़ते है. दूरसंचार, डाक, कस्टम सहित अनेक विभाग ऐसे हैं जो सरकारी है. न चाहकर भी अखबारों को इन विभागों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाना पड़ता है.

भारतीय समाचारपत्रों के बीच 'कट थ्रोट कम्पटीशन' के कारण अनेक अखबारों ने उपभोक्ता वस्तुओं की तरह व्यवहार करना शुरू कर दिया है. पत्रकारों का दृष्टिकोण व्यासायिक हो रहा है. सारी योजनायें अखबार को उपभोक्ता वस्तु मानकर बनाई जा रही हैं. इससे अखबारों की गुणवत्ता में कमी आयी है. पाठक एक अखबार छोड़कर तीसरे का अपना रहे हैं. इस तरह वे किसी एक अखबार से जुड़कर नहीं रह पाते. हैरत और चिंता की बात यह है कि जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में पाठकों की संख्या नहीं बढ़ रही है. समाचार पत्रों के आकर्षण का स्रोत तकनीक बनकर नहीं रह गयी है न कि उनकी विश्वसनीयता. भारतीय प्रेस में अदूरदर्शी व्यावसायिक दृष्टिकोण दबे पांव प्रवेश कर गया है. अखबार घाटे को पूरा करने के लिए सरकारी विज्ञापन एजेन्सियों डी0ए0 वी0 पी0 तथ्रा डी0 आई0 पी0 आर0 पर निर्भर करने लगते हैं. इन एजेन्सियों के नियम भी बड़े और कई संस्करणों वाले अखबारों के पक्ष में जाते है.

समाचार पत्रों को अनेक समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ रह है. आजादी के समय देश में केवल छह रेडियो स्टेशन थे. अब राष्ट्रीय चैनल, एकीकृत उत्तर–पूर्व सेवा तथा वैदेशिक सेवा को छोड़कर भारत मं आकशवाणी के 185 केन्द्र हैं. इनमें तीस केन्दों का विज्ञापन प्रसारण के लिए अलग चैनल हैं. दूरदर्शन की शुरूआत देश में 1959 में बतौर प्रायोगिक सेवा के रूप में की गयी थी जहां से सप्ताह में तीन दिन प्रसारण किया जाता था. 1965 में नियमित सेवायें शुरू कर दिया गया. 1984 में दूरदर्शन के प्रसारण केन्द्रों का जाल सारे देश में बिछ गया. 25 फरवरी1996 तक देश में दूरदर्शन के कुल 582 ट्रांसमीटर थे. इनमें 81 उच्चशक्ति तथा और 402 कम शक्ति के ट्रांसमीटर थे. 197 में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार अब दूरदर्शन की पहुंच 88.2 प्रतिशत जनसंख्या तक हो गयी है. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विकास से समाचारपत्रों की प्रसार–संख्या ही प्रभावित नहीं हुई बल्कि विज्ञापन भी प्रभावित हुआ है. 1984 में अखबारों की लगभग 80 प्रतिशत रह गया था. सरकारी और गैर सरकारी चैनल दिन भर में अनेक बार न केवल समाचार देते हैं अपितु बौद्धिक चर्चाओं, वार्ताओं तथा शिक्षाप्रद कार्यक्रमों से टी0वी0के दर्शकों को व्यस्त रखते हैं निश्चय ही तात्कालिक रूप से दूरदर्शन का प्रभाव अधिक पड़ता है. समाचारपत्र के पाठक तक पहुंचने और अगले दिन के पहले तक दूरदर्शन अखबारों में दी सूचना, जानकारी को पुराना कर देता है. अखबार इस चुनौती का सामना उन्नत तकनीक अपनाकर और पाठकों को बेहतर सेवायें प्रदान करके कर सकते हैं क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अखबारों को क्षति तो पहुंचा सकता है, उनका विकल्प नहीं बन सकता.

सरकारी की कागज संबंधी नीति संतोषजनक नहीं है. 1992 में भारत सरकार ने गैर सरकारी मिलों को अखबारी कागज के उत्पादन की स्वीकृति दे दी, फिर भी देश में कागज की कमी है. उसके मूल्य आसमान छू रहे है. सरकार अखबारी कागज का मूल्य बढ़ने से रोकने में पूरी तरह विफल रही है.

पत्रकारों को सूचना पाने का अधिकार अंततः मिल गया. इस संध में पारित विधेयक संविध ाान के अनुच्छेद 19 {1}में प्रदत्त मौलिक अधि ाकारों की अगली कड़ी के रूप में जाना जायेगा. अनेक कापियों के बाद भी यह विध ोयक इस मामले में सार्थक है कि यह नागरिकों को उन सभी नीतियों तथा निर्णयों की जानकारी प्राप्त करने का अधिकार देता है जो जन जीवन को प्रभावित करती हैं. इस पर भी यह सूचना पाने का अधिकार विश्व **शेष पृष्ठ 30**

सूचनातंत्र और पत्रकारिता

डॉ. अंजनी कुमार दुबे 'भावुक

'आधुनिक समाज में पत्रकारिता का वही महत्व है जो मानव शरीर के लिए भोजन का है. पत्रकारिता के विकास के ही कारण आज की सदी ज्ञान की सदी कही जाती हैं. जैसे–जैसे उत्तरोत्तर ज्ञान का विस्तार होता जाता है वैसे–वैसे सामाजिक प्रगति होती जाती है. सामाजिक प्रगति का मुख्य आधार आर्थिक प्रगति होती है. आज अमेरिका की धौंस आर्थिक प्रगति के ही कारण हैं. यह समय–समय की मांग होती है कि किस समय में कौन सी वस्तु आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है. कभी पशु समाज की आर्थिक आधार थी. मात्र एक कामधेनु के लिए सतयुग में विश्वामित्र व वशिष्ठ में घमासान युद्ध हुआ था. राज्यतंत्र से न्यायतंत्र की सीधी टकराहट में राज्यतंत्र बुरी तरह से पराजित हुआ था. इस युद्ध में राज्यतंत्र की सारी मर्यादा खंडित हुई थी. तब से लेकर आज तक यह युद्ध रुका नहीं हैं. इसके पीछे छिपा है आर्थिक अधिकार. पशु युग, धातु युग, स्वर्ण युग, रजतयुग, लौहयुग, कांसयुग से होते हुए आज पेट्रोल युग में पहुँच कर मानव सभ्यता पिछले सारे मानदण्डों को तोड़ देना चाहती हैं. आज जिसके पास पेट्रोल है, वह शक्तिशाली है. इसीलिए इसे आज पेट्रो डालर कहा जाने लगा हैं. इसे लेकर पूरा विश्व खेमा बद्ध हैं. आज की पत्रकारिता, प्रोद्योगिकी से जुड़ी है. प्रोद्योगिकी के माध्यम से पूरा विश्व आज सिमट गया हैं. पल–पल की खबर आज उपलब्ध हैं. विश्व के 15 प्रतिशत लोग 90 प्रतिशत वैश्विक सूचना पत्रकारिता का लाभ ले रहे हैं. विकसित देशों की तुलना में भारत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं हैं. सूचना प्रोद्योगिकी बिल पास हो जाने से कुछ नयेपन की आशा बंधी हैं. आज सूचना क्रांति का दौर चल रहा हैं. सूचना के क्षेत्र में नई–नई तकनीक विकसित होती जा रही है. इससे सूचना सम्प्रेषण का विस्तार होता जा रहा है. नई सूचना, नये विकास का आधार बनती जा रही है.

मानव के बौद्धिक विकास के साथ–साथ जब आर्थिक महत्व सर्वोपरि होता गया तो सूचना तंत्र का भी विकास किया गया. आर्थिक महत्व में शक्तिशाली व्यक्ति का कमजोर व्यक्ति का शोषण व स्वयं की सम्पत्ति का संरक्षण, ये दोनों ही चीजें महत्वपूर्ण थी. ऐसी स्थिति में सूचना तंत्र का निरन्तर विकास होता रहा क्योंकि शत्रु लुटेरों से बचने का एकमात्र यही उपाय था. मुद्रण का जब आविष्कार हुआ तो सूचना तंत्र को अत्यधिक आधार मिला. सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजनें में सुविधा हुई. मुद्रण के रुप में समाचार पत्र व पत्रिकाएँ सूचना प्रेषण का महत्वपूर्ण आधार बनी. आज हमारे जीवन में इसका महत्व इतना अधिक बढ़ गया है कि बिना इसके जीवन अधूरा लगता है. इलेक्ट्रानिक्स तकनीक के नवीनतम विकास ने तो सूचना के क्षेत्र में क्रांति ही उत्पन्न कर दी हैं. पत्रकारिता के साथ–साथ टेलीफोन, फैक्स, ई–मेल, रेडियों, दूरदर्शन, सेटेलाइट, कम्प्यूटर, बेबसाइड आदि क्षेत्रों में भी निरन्तर विकास होता जा रहा हैं.

आज प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका है. सूरज की किरणों के उदय के साथ ही अगर अखबार हाथ में न आए तो लगता है कि सुबह–सुबह ही कुछ खो गया हैं. मानसिक अशांति सी होने लगती हैं. पिछले दो दशको में सूचना तकनीक का इतना अधिक विकास हुआ है कि हम सोच नहीं पाते हैं कि आज जिसे हम देख रहे हैं कल वह कितना अधिक विकसित रुप में हमारे सामने आएगा. विश्व के विकसित देशों में सूचना तकनीक को नये ढंग से विकसित करने के लिए एक होड़ सी लगी है. विकासशील देश अभी भी, विकसित देशों की तुलना में पीछे हैं. भारत भी अभी इसी श्रेणी में है. जबकि जापान, कोरिया, चीन आदि देश बहुत आगे हैं. आज सूचना के महत्वपूर्ण साधनों पर पूँजीपति वर्ग का ही एकाधिकार हैं. विश्व के लगभग 80 प्रतिशत समाचारों, लेखों, फीचर आदि समाचार एजेन्सियों पर पूँजीपति वर्ग का ही एकाधिकारा है.

सूचना क्रांति में कम्प्यूटर की महत्वपूर्ण भूमिका हैं. आज मानव जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं बचा है जहाँ कम्प्यूटर ने प्रवेश न किया हो. कल का औद्योगिक समाज, आज सूचना समाज में परिवर्तित हो चुका हैं. हमारे निजी, सामाजिक, व्यावसायिक व वाणिज्यिक कार्य कलापों में अनेक तरह की सुविधाएँ आज हमें कम्प्यूटर से प्राप्त हो रही हैं. इससे श्रम और समय दोनों की शेष पृष्ठ पर....

D;ksa ughamiHk jdj jpedik jgh efgyk i=dkj\

✍ कुमकुम शर्मा
संपादक, उत्तर प्रदेश मासिक

हिन्दी पत्रकारिता पर पुरुषों का कब्जा आज भी पुरी तरह बरकरार हैं. साहित्य का क्षेत्र हो अथवा समाचार जगत का सभी स्थानों पर पुरूषों को प्रधानता बनी हुई हैं महिलाओं को आगे लाने, आगे बढ़ाने को सर्वाधिक वकालत करने वाला पत्रकार जगत स्वयं अपने में पुरूष पत्रकारों को प्रथम श्रेणी की पत्रकार मानता हैं ओर महिला पत्रकारों तो कार्यालय की शोभा की वस्तु के समान समझा हैं. तभी तो अधिकांश पत्रकार कार्यालयों में आपको इधर–उधर चहलकदमी करती चुलबुली अल्ट्रा मार्डन सजी धजी अच्छे नाक नक्श वाली युवतियां घूमती हुई दिखाई पड़ जायेंगी, परन्तु महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों से उन्हें सर्वथा अछूता रखा जाता हैं क्योंकि यह स्वीकार कर लिया गया है कि महिलाएं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पादित करने में सक्षम नही हैं. जबकि तथ्य और सत्य इसके सर्वथा विपरीत हैं.

महिला पत्रकारों को जब आप महत्वपूर्ण कार्यो को सौंपेगे ही नहीं, तो वे किस स्थिति में महत्वपूर्ण कार्यों को सफलतापूर्वक करने का अभ्यास कर पायेगीं? इस संदर्भ में में मैं यह बाता उपयुक्त समझती हु. जब मैं प्रयाग विश्वविद्यालय की छात्रा थी, उसी समय अमिताभ बच्चन ओर स्वर्गीय हेमवती नन्दन बहुगुणा का चर्चित लोकसभा चुनाव सम्पन्न होने जा रहा था. मैं महिलाओं को पत्रिका 'मनोरमा' माया प्रेस से जुड़ी हुई थी. तभी माया प्रेस के मालिकें ने यह तय किया कि बहुगुणा बनाम अमिताभ बच्चन विशेषाक माया का प्रकाशित किया जाये तत्काल बड़े–बड़े साइनबोर्डो पर विज्ञापनों पर विज्ञापनों के माध्यम को अपनाया गया. उस समय 'मनोरमा' के संयुक्त सपांदक पद पर मेरे पिता डॉ0 राजकुमार शर्मा के अभिन्न मित्र और साहित्यकार/पत्रकार श्री अमरकान्त जी और माया में बाबूलाल शर्मा जी. ना जाने कैसे मेरा नाम मालिक संपादक श्री आलोक मित्र के चयन में आ गया और लेखिका संघ की पूर्व अध्यक्षा मेरी माता सरोज शर्मा जी के साथ मुझे भी उक्त विशेषांक के संपादक मंडल में जोड़ लिया गया. परन्तु निर्णय यह लिया गया कि मुझे टेबुल वर्क सौंप जाए. मैने श्री आलोक मित्र जी से भेंट करके अपनी मंशा जाहिर कर दी कि मुझे फील्ड वर्क करने का सुअवसर दिया जाए और उनकी स्वीकृति के पश्चात् मैं और माताजी ने लोकसभा चुनाव क्षेत्र का प्रत्येक छोटी–बड़ी मीटिगों को ध्यानपूर्वक देखा, वहां काकी गंभीरता और राजनीतिक उठापठक का नजदीक से अध्यन किया, फिर माया के बहुगुणा बनाम अमिताभ विशेषांक की तैयारी की, जिसे श्री बाबूलाल शर्मा और आलोक मित्र जी ने सम्पूर्णता प्रदान की. माया का यह विशेषांक एक ऐतिहासिक विशेषांक बन गया और प्रसार संख्या में पिछले सभी विशेषांको की संख्या को बहुत पीछे छोड़ गया.

मेरा सदैव यही कथन है कि आप मौका मिले तो दें, तभी तो कुछ कमाल कर दिखाने में सक्षम होगी कोई महिला पत्रकार? ठीक यही स्थिति तब उत्पन्न हुई, जब वाराणसी से, 'स्वतंत्र भारत' दैनिक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ. वरिष्ठ पत्रकार श्री बच्चन सिंह जो उसके स्थानीय संपादक बनाये गये थे उन्होंने मनोरमा में छपे हुए मेरे अग्रलेखों को पढ़ा और 'माया' के उक्त को विशेषांक को भी. फीचर इंचार्ज के पद पर उन्होंने मेरा चयन किया, परन्तु वहां भी टेबुल वर्क ही सौंपा गया. फिर जब फील्डवर्क की मेरी मांग पर मुझे सौपा गया तो श्री बच्चन सिंह जी के निदेशन में मेरी लिखी गई रिर्पोटों को सभी ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की और मुझसे पूर्व जो युवक पत्रकार कार्य रहा था उससे कहीं अधिक प्रशंसा मुझे मिली.

महिला पत्रकारों को ऐसी स्थितियों का सामना मेरे अनुभवों के अधार पर सभी स्थानों पर झेलना पड़ता हैं. सरकारी कार्यालयों में तो उनकी स्थिति और भी विषम तथा दयनीय हो जाती है, क्योंकि वहां तो सीधे बॉस के अधीन कार्य करना होता है. अधिकार वहां आपके अपने कर्तव्य अथवा पद की गरिमा के अनुकूल नहीं, बल्कि बीस की इच्छा के अनुकूल सम्पादित करने होते हैं चाहे समाचार पत्र का कार्यालय हो अथवा पत्र–पत्रिका का सभी स्थानों पर लगभग महिला पत्रकारों को ऐसी ही हेय दृष्टि से देखा जाता हैं जैसे देश के दोयम दर्जे के नागरिक?

मैं आज तक यह नहीं समझ पाई कि ज्ञान और समझ तथा व्यवहारिकता में महिलाओं से कहॉ अधिक पिछड़े हुए पुरुष भी क्यों अपने को वी.आई.पी. समझकर व्यवहार करते हैं, जबकि कार्यक्षमता और सूझबूझ में महिला सहकर्मी उनसे सर्दव बीस ही पड़ती है? मेरे विचार से यह मानसिकता मात्र इसलिए बनी हुई है कि प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों की प्रधानता एक लम्बसे अरसे से चली आ रही हैं और महिलाओं ने पूर्व में पत्रकारिता के क्षेत्र को ठीक से अपनाया नहीं था. इक्कादुक्का कोई महिला इस क्षेत्र में प्रवेश करती थी और वह अपने आपको को भूखे भेड़ियों के बीच सदैव असुरक्षित महसूस करती रहती थी और मात्र इसलिए उत्तरदायित्वपूर्ण व जोखिम भरे कार्यो को अपने हाथ में लेने से कतराती रहती थी.

वर्तमान युग में महिलाओं में शिक्षा का प्रचार प्रसार अधिक हुआ है और उन्होंने अपने आपको प्रत्येक जीवन –क्षेत्र में पुरुषों के मुकाबले में अधिक सक्षम सबल और सफल सिद्ध करने में सफलता अर्जित की है, परन्तु स्थित वस्तुतः आज भी वही बनी हुई हैं और आज भी अपने आपमें सबल, सक्षम होने के वाली महिलाओं को कोई भी महत्वपूर्ण पद या उत्तरदायित्व नहीं सौपा जाता. कुछेक महिलाएं जिनकी राजीनितिक पहुँच लम्बी है अथवा जिनके पति या पिता किसी बहुत अच्छे प्रशासनिक पद पर आसीन है, उन्हीं को अवसर प्रदान किये जाते हैं. शेष महिलाओं के साथ वैसा ही बर्ताव किया जाता है, जिसकी चर्चा मैने उपर की हैं.

fdKkus fgUrhdksegkjcuk;kgS

डॉ0 शिवगोपाल मिश्र

हिन्दी का बेचारी कहना अपना अपमान करना है. जब वह पहले पहल "खड़ी " हुई तो बोली के साथ. यानी शिशु जैसे खड़ा होने लगता है तो बोलने भी लगता हैं. उसके पूर्व उसकी तुतुलाहट रहती हैं। माता–पिता को तोतली बोली भी मुधर, सरस लगती हैं. इसी तरह खड़ी बोली बनने के पूर्व हिन्दी अपनी ब्रज भाषा की मिठास के लिए बहुचर्चित रही. अवधी भी कम मीठी नहीं थी. कहा जाता हैं कि इन दोनों भाषाओं ने कृष्ण तथा राम को लोकप्रिय बनाया, उन्हें जनमानस के निकट लाने का कार्य किया. वस्तुतः हिन्दी के खड़ी करने में इन दोंनों बोलियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं. आज से लगभग 600 वर्ष पूर्व चाहे अमीर खुसरों रहे हों, या कबीर, इनके काव्य में खड़ी बोली के बीज थें. किन्तु खड़ी बोली को खड़ी करने का सर्वाधिक श्रेय ब्रजभाषा के ही प्रसिद्ध कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को हैं. उन्होंने गद्य की भाषा के रुप में इसे खड़ा किया. फिर तो भारतेन्दु मण्डल के अनेक साहित्यकारों ने इसका समर्थन किया.

1900 ई. में प्रयाग से 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन एक युगान्तकारी घटना रही हैं. इसके द्वारा पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली या हिन्दी को ज्ञान–विज्ञान की भाषा बना डालाण उत्तर भारत के वे हिन्दी भाषा भाषी जो काव्य–सागर में आनन्द की हिलोरें लेन में मस्त थे, सहसा विज्ञान की तरंगों में बहने लगे. हिन्दी अब विज्ञान वाहिका बन गई. प्रारम्भ मे बीस–तीस वर्षो मे इतना विज्ञान साहित्य परोसा गया कि पाठकों को विश्वास होने लगा कि वे ऐसे समुन्नत काल का स्वप्न देख सकते हैं जिसमें सस्कृत भाषा जैसी गंभीरता एवं प्रवाह आने से विज्ञान की बातें आम लोगों को सुलभ हो जावेंगी.

और सचमुच ही यह सपना सत्य सिद्ध हुआ. स्वतन्त्रता प्राप्त होने तक इलाहाबाद हिन्दी में विज्ञान साहित्य के सृजन का केन्द्र बना रहा. 'सरस्वती' पत्रिका जिस इमारत से छपती थी, उसी के पास 1956 में विज्ञान परिषद का विशाल भवन खड़ा हो गया और 1915 से ही प्रकाशित होने वाली विज्ञान की मासिक पत्रिका 'विज्ञान' अब बहुरंगी बन कर जन–मन को मोह रही हैं. इतना बड़ा परिवर्तन कैसे सम्भव हुआ? यह हमारे उन हिन्दी के विज्ञान लेखकों एवं सर्जकों की तपस्या का फल हैं जिन्होंने हिन्दी को विज्ञान की भाषा बनाने के लिए अपना तन–मन–धन सर्वस्व अर्पित कर दिया.

यदि आज हिन्दी समर्थ बनी है तो मात्र वैज्ञानिक साहित्य का अविरत सृजन होने से. शायद ही ऐसी कोई विधा हो जिसमैं हिन्दी में विज्ञान साहित्य उपलब्ध न हो. इस समय 3000 से अधिक लेखक हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य का सृजन कर रहे हैं. महिलाएं भी पीछे नहीं उनकी संख्या 150 से कम नहीं हैं. आखिर, यह सब कैसे और क्यों सम्भव हो पाया? आइये इसका विवेचन करें–

विज्ञान जिस गति से आगे बढ़ता है, उसी गति से लेखन के लिए आवश्यक है कि हमारे पास पारिभाषिक शब्दों के पर्याय सुलभ हों. किन्तु सारा विज्ञान, अंग्रेजी में ही उपलब्ध होने से अंग्रेजी के समानान्तर हिन्दी के पर्यायों का सुलभ हो पाना कोई आसान कार्य नहीं हैं. एक तरह से प्रारम्भ में जितना भी विज्ञान विषयक लेखन हुआ, वह अनुवाद ही होता था. किन्तु इस अनुवाद के लिए हमारे पास पर्याय नहीं थे. उपयुक्त पर्यायों का, ऐसे पर्यायों का जिनको परिवर्तित किये बिना लगातार प्रयोग में लाया जा सके, निर्माण कार्य बहुत सोच समझ कर किया जाता रहा. फिर भी व्यक्तिगत रुचि के कारण नाना प्रकार के पर्याय प्रचलित होते रहे. इससे अराजकता उत्पन्न होने का भय था और भाषा की प्रगति रुक सकती थी फलतः नागरी प्रचारिणी सभा ने पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का कार्य अपने हाथों में लिया और कुछ ही वर्षो में एक कामचलाऊ पारिभाषिक कोश उपलब्ध करा दिया. इससे पर्यायों में एकरुपता सुनिश्चित हो सकी. धीरे–धीरे ऐसा अनुभव किया जाने लगा कि राष्ट्रीय स्तर पर पारिभाषिक शब्दावली का कार्य सम्पन्न हो तो अच्छा रहे. फलतः 1950 के बाद भारत सरकार ने इस दिशा में पहल की और 1961 में शब्दावली आयोग बना जिसके निरीक्षण में देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों तथा भाषाविदों ने मिलकर पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कार्य शुरु हुआ और अब वह पूरा हो चुका हैं. इस तरह 8 लाख पारिभाषिक शब्द निर्मित हो चुके हैं. यह कोई छोटा–मोटा कार्य नहीं हैं.

किन्तु इन पारिभाषिक शब्दों में अधिकांश ऐसे हैं जो हिन्दी के शब्द कोशों में नहीं मिलेंगे क्योंकि साहित्य में इनका प्रयोग नहीं होता रहा हैं. ये नितान्त कृत्रिम शब्द हैं. अभी तक हिन्दी भाषी लोग तत्सम, तद्भव तथा देशी शब्दों से ही परिचित थे. किन्तु अब कृत्रिम शब्दों का जो विपुल भण्डार पृथक–पृथक कोशों के रुप में उपलब्ध है, वह स्वागत योग्य हैं. उससे हिन्दी की अभिव्यक्ति शक्ति में विस्तार होगा. ज्ञान–विज्ञान की भाषा बनने के लिए आवश्यक था कि यह भागीरथ प्रयत्न देश के विद्वान करते. और सचमुच ही ज्ञान की गंगा को गंगासागर तक पहुँचाने का कार्य सम्पन्न हो चुका हैं. अब तो लेखकों, पाठकों तथा सहृदयों को इस ज्ञान–गंगा में गोते लगाने का और रुचि के अनुसार शब्द

रत्नों को निकाल कर उन्हें लेखन में व्यवहृत करने का समय हैं.

यदि हिन्दी को आधुनिक विज्ञान की भाषा न बनाया जाता तो देश के वासी, राष्ट्रभाषा हिन्दी के भाषी विज्ञान के नए—नए विचारों एवं आविष्कारों से वंचित रह जाते. किन्तु खेद है कि देशवासियों की मानसिकता में किंचित भी नहीं आ रहा हैं. वे पश्चिमाभिमुखी तथा भाषा के लिए अंग्रेजी पर आश्रित बने रहना चाहते हैं. वे अपने देश की ज्ञान गंगा में अवगाहन नक करके उल्टी गंगा बहाये रखना चाहते हैं. यह घातक प्रवृत्ति हैं. किसी भी राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा होती हैं. हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित हो चुकी हैं तो फिर उसे सीखने, उसका प्रयोग करने, उसे ज्ञान विज्ञान की भाषा बनने देने के लिए प्राणपण से प्रयास क्यों नहीं हो रहे हैं? जो लोग सोचते हैं कि भारत द्विभाषी राष्ट्र बना रहेगा, वे गलतफहमी हैं. देशवासियों को अन्ततः हिन्दी ही अपनानी होगी. हिन्दी के विज्ञान लेखकों ने विज्ञान की समस्त शाखाओं में इतना साहित्य उपलब्ध करा दिया है कि अब उससे बचा नहीं जा सकता. भले ही सरकारी नीति ढुलमुल बनी रहे किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी को ही अपना स्थान बनाना हैं. और हिन्दी को उसका स्थान मिलकर रहेगा. विज्ञान की गंगा का प्रवाह हिन्दी की जीवनी शक्ति के बल पर अनवरत बना रहेगा. हिन्दी के विज्ञान लेखकों की तपस्या व्यर्थ नहीं जावेगी. वे हिन्दी को इतना समर्थ बना चुके हैं कि वह सीना तान कर खड़ी हैं. हिन्दी सचमुच खड़ी और समर्थ भाषा है, वह विज्ञान की भाषा है.

जय हिन्दी, जय नागरी

0 प्रधानमंत्री, विज्ञान परिषद, प्रयाग
महर्षि दयानंद मार्ग,
इलाहाबाद—211002

fgUnh i=dkfjrk ds fofo/k#i

श्रीमती जया शुक्ला

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता में स्वार्थ, चाटुकारिता, ईर्ष्या, गुटबंदी, जातिवाद और व्यावसायिकता आदि का समावेश हो गया. इन सब दोषों के होते हुए भी हिन्दी पत्रकारिता का क्षेत्र दिन—प्रतिदिन व्यापक विस्तार की ओर अग्रसर होता गया. मनुष्य के जीवन से संबंधित कोई भी विषय ऐसा शेष नहीं रहा, जिस पर पत्र—पत्रिकाओं में लेख आदि प्रकाशित न हुये हों.

साहित्य, राजनीति और धर्म अध्यात्म के अतिरिक्त खेल, विज्ञान, कृषि, ज्योतिष, युवा जगत, बाल जगत, महिला जगत, फिल्म, पाक—विद्या, संगीत, कला सोन्दर्य, स्वास्थ्य, मनोरंजन, वाणिज्य, अर्थ, जाति एवं वर्गगत विषयों पर अनेक विधाओं में लेखन होता रहा. आज भी स्वतंत्रता के पाच दशक व्यतीत हो जाने के पश्चात् लेखन की यह गति अपने सहज रुप में निरन्तर गतिमान हें.

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता मात्र समसामयिक संदर्भो से ही जुड़ी नही हैं, वरन, विदेशों की भ्झी पर्याप्त जानकारी हमें अपने देश की हिन्दी पत्रकारिता से प्राप्त होती है. आज पत्रकारिता का स्वरुप इतना अधिक विस्तृत हो गया है कि उसकी विशिष्टताओं, उसकी विविधताओं के अधार पर अत्यंत सहजता से उसका वर्गीकरण किया जा सकता हैं. डॉ. सुशील कुमार जोशी के अनुसार—यद्यपि वर्गीकरण का कोई एक प्रतिमान या निष्कर्ष अपने आप में पूर्ण और अंतिम नहीं हो सकता है, किन्तु इससे यह सुविधा अवश्य मिल जाती है कि विषय को भली प्रकार से समझा जा सके. स्वातंत्रयोत्तर वर्षो में हिन्दी पत्रकारिता का वैविध्यपरक विकास तथा विविध पत्र—पत्रिकाओं का प्रकाशन इस बात का द्योतक हैं कि वह लकीर की फकीर नहीं हैं. उसके अनेक रुप हैं और उसके अनेक रंगे हैं.

लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ. रमेश चनद्र त्रिपाठी ने अपने शोधग्रन्थ में पत्रकारिता के विभाजन के दो मुख्य आधार माने हैं—प्रकाशनावधि के अनुसार ओर उद्देश्य के आधार पर.

प्रकाशनावधि के अनुसार पत्र—पत्रिकाओं के कई रुप हैं— दैनिक, अर्द्ध—साप्ताहिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विवमासिक, त्रैमासिक, अद्ध—वार्षिक, वार्षिक तथा अनियतकालीन.'

उद्देश्य के आधार पर पत्र—पत्रिकाओं का विभाजन इस प्रकार किया गया है—'साहित्यिक, बाल पत्र, वाणिज्य—व्यवसाय विषयक, विज्ञान एवं तकनीकी पत्रकारिता, समाचार पत्रकारिता, धार्मिक एवं आध्यात्मिक पत्रकारिता, फिल्मी पत्रकारिता, रेडियों पत्रकारिता, दूरदर्शन पत्रकारिता, महिलापयोगी पत्रकारिता, सांस्कृतिक एवं कला विषयक पत्रकारिता, शिक्षा—संस्थाओं के मुखपत्र, सामुदायिक या जातीय पत्रकारिता, राजनीतिक संस्थाओं के मुखपत्र.

पत्रकारिता के वर्गीकरण के संबंध में डॉ0 सुशील जोशी लिखती है—वर्गीकरण के अनेक आधार हो सकते है, किन्तु यहां पत्रकारिता को विषय के आधार पर वर्गीकृत किया गया हैं. विषयपरक वर्गीकरण से अभिप्राय उस पत्रकारिता से है, जो इस क्षेत्र में आये वैविध्यपरक पत्रों से संम्बंध रखती हैं.

विषय के आधार पर किया गया वर्गीकरण इस प्रकार हैं—समाचार एवं व्यावसायिक संदर्भ, धर्म एवं दर्शन, साहित्यिक एवं सास्कृतिक, विज्ञान पत्रकारिता, खेल, उद्योग व्यवसाय, फिल्मी पत्रकारिता कृषि पत्रकारिता.**शेष पृष्ठ 18पर...**

कहानी

Ikaoyh

जसवन्त सिंह विरदी

सांवली रो रही थी और उसकी मासुम सी आवाज़ कांप रही थी. उसकी छोटी–छोटी आंखें भींग गई थी और गुलाब की पंखड़िया जैसे छोटे ओंठ कांप रहे थे. उसका सांवला रंग और भी गहरा गया था. सांवली की माता रसोई घर में काम कर रही थी, इसलिए उसे सांवली की आवाज पूरी तरह सुनाई नहीं दे रही थी. इस घर में मेरी ओर कोई ध्यान नहीं देता. सांवली सोचती थी, और इस बात को सोच कर फिर रो देती थी.

रो ले, तू भी रो ले. सांवली की माता उसकी आवाज सुन लेती, तो खीझ कर कहती, और उसे रोने के लिए छोड़ देती. जैसे उसे सांवली की कोई भी परवाह न हो.

''मैं किस–किस की परवाह करुँ?' वह कहती थी.

जिस दिन सांवली का जन्म हुआ, उस दिन उसकी माता बहुत रोई थी'——हाय, हाय! तीसरी भी बेटी ही आ गई. ' उसने दुःखी मन से कहा था और वह मूर्छित हो गई थी. उस समय लगता था कि या तो वह बचेगी या सांवली! मगर दोनों ही जीवित रह गई थी. तब आस–पड़ोस की औरतों ने कहा था–'लड़कियां कब मरती हैं....मां–बाप का अच्छी तरह खून पी कर जाएंगी.' औरतों की ये बात सुनकर सांवली की माता मुस्करा दी थी. एक ऐसी मुस्कराहट जिसे केवल औरत ही मुस्करा सकती हैं. मगर सांवली की ओर देख कर वह एक सर्द आह भरे बिना नहीं रह पायी थी. उस वक्त सांवली की मासूम आंखे कह रही थी–'इसमें मेरा क्या दोष हैं.'

सांवली रो रही थी और उसकी माता उसकी ओर से विमुख हुई रसोई घर में काम किए जा रही थी.... रो ले तू भी. वह क्रोधित होकर कहती. उसकी बात सून कर सांवली क्या कहना चाहती थी. ...मां, मुझे भुख लगी हैं, मुझे दूध दो, मुझे दूध दो.'

मगर सांवली को पता नहीं चलता था कि वह अपने मन की बात कैसे कहें. उसे अभी कोई भी भाषा नहीं आती थी.

सांवली की दोनों बड़ी बहने स्कूल जाती थी. वे जब स्कूल का काम निपटा लेती

तो सांवली की देखती.

'मुझे उठा लो, मुझे खिलाओं.' सांवली की नज़र उन्हें कह रही होती, मगर वे सांवली की ओर अधिक ध्यान न दे पाती. क्योंकि उनकी माता भी तो सांवली की अधिक ध्यान नहीं देती थी और फिर वे अभी छोटी भी थी. उनसे स्कूल का काम ही नहीं किया जाता था. हां, जब आस–पड़ोस के किसी घर में कोई लड़का जन्म लेता तो वे लड़कियां सांवली को देख कर कहती थी....'तू हमारा भाई बनकर क्यों नहीं आई? मगर सांवली कोई उत्तर नहीं दे पाती. वह क्या उत्तर देती.

घर का काम करने के लिए और सांवली को खिलाने के लिए गत दिनों में जो मुण्डू नौकर रखा गया था, वह सांवली को कतई पसन्द नहीं था. उसके रुखें–रुखें हाथ हर समय उसे चुभते रहते थे. जब सांवली की माता उसे क्रोध ा से देखती तो वह सांवली को चुप कर जाने के लिए गुस्से से देखता. मगर सांवली सहम कर और भी जोर से रोने लगती. उसे अभी तक इतनी समझ नहीं आई थी कि मुण्डू के गुस्सें का भाव था.....'चुप कर जा, मर जानियें....'

वास्तव में मुण्डू को आदेश था कि उसे सारा काम भी करना है और सांवली को भी नहीं रोने देना. इसलिए मुण्डू सांवली को रोता छोड़ कर भाग गया था और उसने मुड़ कर भी नहीं देखा था. उस समय सांवली ने शायद सोचा था.... 'मां–बाप के बगैर बेटियां को कौन लाड़ प्यार दे सकता है...'

'सांवली हर समय रोती रहती है....' सांवली की बहने कहती थी. वे हर बात को बोल कर कह लेती थी....'

'क्यों माताजी, यह क्यों रोती हैं?'

'रो लेने दो इसे.'सांवली की माता कह कर परे हट जाती. उसके कहने का भाव था....

"यह तो वर्ष भर के बादा रोना बन्द कर देती, मगर मेरे लिए तो उम्र भर का रोना पड़ गया हैं. बेटियों की यहां क्या आवश्यकता है...."

"यह बोलती क्यों नहीं?"सांवली की बहने फिर मासूमियत से पूछती तो माता कहती. .."अभी छोटी है..."

"मैं बोलना चाहती हूॅं, मैं बोलना चाहती हूॅं..." सांवली रोती हुई कहती, मगर उसके मन की बात कोई नहीं समझता था, कोई भी नहीं.

"तुम्हें क्या दुख हैं?" सांवली को रोती देख कर उसकी बहने पूछती, मगर वह कुछ कहने की बजाए, रोती जाती, रोती जाती. वैसे, वह बोल पाती तो कहती.. ."मुझे कोई भी दुख नहीं... मगर मैं बोल क्यों नहीं पाती.... मैं बोलती क्यों नहीं....." मैं बोलती क्यों नहीं?

कोई भी उसे उत्तर न देता.

किसी वक्त सांवली देखती कि उसकी

माता उसकी बहनों के साथ बातें कर होती थी, वह खामोशी से ध्यान लगा कर पुर्वक सुनती कि वे क्या बातें कर रही हैं..., मगर वह कुछ भी समझ न पाती. उसका मन होता, कहे.... मुझे समझाओं, तुम क्या बातें कह रही हो. मगर वह रोने के अलावा कुछ न करती. उस समय उसकी माता कह रही होती. .. देखों कैसे स्यानों की भॉति देख रही हैं. मेरी बेटी समझदार होगी.

फिर पता नहीं क्यों, वह आहें भरने लगती और सांवली उदास हो जाती. सांवली का पिता दफतर जाते हुए अथवा दफतर से लौटते हुए उसे देख कर सीटी बजाता तो उसके मन में भी आता कि वह भी सीटी बजा कर उत्तर दें, मगर वह कुछ न कह पाती.

"छः महीने की हो गई हैं, पता नहीं कब बोलने लगेगी?"सांवली की माता कहती तो वह सोचती... मैं काफी बड़ी हो गई हुॅ, बोलती क्यों नहीं? और वह बोलने के लिए मुॅह खोलती, मगर उसे पता न चलता कि क्या कहें बोल कर कुछ कह पाना उसे अत्यन्त कठिन महसूस होता था. "पता नहीं ये लोग कैसे बोल लेते हैं?" वह आश्चर्य से सोचती.

सांवली प्रातःकाल ही जाग जाती थी. उस समय वह सुनती, खिड़की से बाहर आंगन में लगे हुए नीम के पेड़ पर बैठे पंछी "चीं–चीं, चूं चू करते हुए आपस में बाते कर रहे होते थे. सांवली का मन होता, कहे ..... मेरे पास आओं, मेरे साथ बातें करों, मेरे सामने आओ, तुम कौन हों?"

मगर पंछी आपस में ही बत्याते रहते, और उसकी बात समझ कर उस के पास कभी न आते. उन्हें तो यह भी मालूम नहीं था कि सांवली कौन है.... ? जब वह रोने लगती तब ही पंछियों को उसके अस्तित्व का पता चलता. मगर वे इस बात को न जान पाते कि एक छोटी बच्ची के रोने की आवाज़ कहां से आ रही हैं.

सांवली भूखी थी और रो रही थी. वह रोती हुई अपनी माता से कह रही थी– "मुझे दूध पिलाओं, मुझे दूध पिलाओं.. . . "

"विलखती रह मैं क्या करुं? सांवली की माता ने खीझ कर कहा–"मेरे लिए और भी बहुत काम है. तू विस्तर पर पड़ी मरी नहीं जाती...."

"मैंने दूध पीना है, मैंने दूध पीना है. सांवली ने अत्यंत जोर से कहा" मगर उसकी माता ने उसकी ओर तनिक भी ध्यान न दिया तो वअ अकस्मात ही चुप कर गई.

"सांवली को क्या हुआ? वह चुप क्यों कर गई?" अभी उसकी माता सोच भी न पाई थी कि सांवली ने जोर से बल कर कहा–"मां.... मां.....?"

सांवली की आवाज बहुत ही सुकोमल और मधुर थी. लगा जैसे वातावरण में एक नगमा थिरक गया हो, आत्मा को किसी ने असीम प्रेम से स्पर्श कर लिया हो, और कोई सूक्ष्म भावों वाली कविता अपने भावपूर्ण शब्दो के साथ साकार हो गई हों.

अपनी सांवली बेटी के मुंह से "मां" शब्द सुन कर उसकी माता रसोई घर से भागी हुई आई..."हाय, मैं मर जाऊॅ, मेरी बेटी क्या कहती है?"

सांवली ने अपनी माता को देख कर फिर कहा..."मां...मां...." और उसने माता की ओर बढ़ने के लिए हाथ पांव हिलाने शुरु कर दिए. उसके छोटे–छोटे कमल जैसे हाथ कभी खुलते थे और कभी बन्द होते थे.

"मैं समझ गई.... मैं समझ गई." कह कर माता ने सांवली को उठा कर हृदय से लगा लिया. उस समय सांवली की माता का दूध उतर आया था, और अमृत की वे बूंदे सांवली के मुंह में झरने लगी थी.

"मैं इस मासुम जिन्दगी की ओर क्यों ध्यान नहीं देती?" उसने सोचा और वह सांवली की सुकोमल देह को सहलाने लगी........

"बेटियों में क्या जान नहीं होती?"

उस समय सांवली की माता उसके आंसू पोछती हुई उसे कह रही थी–"सांवली, तू क्यों रो रही हैं?.... तू तो मेरी लाडली बेटी हैं."

सांवली दूध पी रही थी और सोच रही थी..."मेरी मां कितनी अच्छी हैं, मेंरी मां कितनी अच्छी हैं....."

96, गोल्डेन ऐवन्यू फेज–1, जालन्धर–144022

---

fgUnh i=dkfjrk ds 'ks'k

मेरी अपनी दृष्टि में वर्तमान समय में पत्रकारिता के विविध रुप हो गये हैं और जीवन के विभिन्न रुपों को स्थापित करने का ही काम आज की पत्रकारिता नहीं कर रही है, वरन् हिन्दी की वर्तमान पत्रकारिता ने अपना स्वरुप ही इतना विशाल एवं आकर्षक बना लिया है कि वह संसार की पत्रकारिता से होड़ ले रही हैं.

वर्तमान काल ही हिन्दी पत्रकारिता का वर्गीकरण मुख्य रुप से निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

1. साहित्यिक पत्रकारिता 2. सांस्कृतिक पत्रकारिता 3. धार्मिक एवं आध्यात्मिक पत्रकारिता 4. खेल पत्रकारिता 5. विज्ञान पत्रकारिता 6. उद्योग एवं व्यावसायिक पत्रकारिता 7. चिकित्सा पत्रकारिता 8. फिल्म पत्रकारिता 9. कृषि पत्रकारिता 10. बाल पत्रकारिता 11. हास्य–व्यंग्य पत्रकारिता 12. महिला पत्रकारिता 13. सर्वोदय पत्रकारिता 14. ब्रेल पत्रकारिता

अब न धोखा खायेंगे बन्दानवाज
देख ली हमने तुम्हारी हर अदा
खोदकर देखा तो बस मिट्टी मिली
संगेमरमर–सा बदन जिसका दिखा।

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'दोस्त'
`सरस्वती सदन, तलवण्डी, कोटा

fgUnh ds oVo`{k lkfgR; lEesyu ds lfdz; iz/kkuea=h%fcHkwfr feJ

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल पक्षधर, 1968 में हिन्दी भाषा आन्दोलन में सक्रिय भूमिका अदा कर चुके श्री विभूति मिश्र राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में भी निष्ठापूर्वक कियाशील रहे. आपका साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में विशेष अभिरुचि रहा है. आप सम्मेलन तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नयन की योजनाओं के प्रति काफी सक्रिय रहे हैं. भाषा से सम्बंधित सम–सामयिक पत्रिकाओं में आपके अनेक सारगर्भित लेख प्रकाशित हो चुके है.

आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित हिन्दी मासिक 'राष्ट्रभाषा संदेश' तथा 'सम्मेलन' पत्रिका के सम्पादक हैं तथा 'भारतीय भाषा साहित्य', 'कैलाश मानसरोवर' एवं तपोभूमि' का सम्पादन भी कर चुके हैं.

आप मानव संसाधन विकास मंत्रालय की स्थायी संस्था 'हिन्दी शिक्षा समिति' के सदस्य, रक्षा विभाग एंव रक्षा अनुसंधान मंत्रालय तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के उपसभापति तथा कार्यकारिणी सदस्य, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ नई दिल्ली की कार्यसमिति के सदस्य के रुप में भी हैं. आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद के प्रधानमंत्री पद को भी सुशोभित कर चुके हैं.

आपका कार्यालयः हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 12, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद–211003 पर स्थित है तथा आपका आवास 973/199ए, सोहबतियाबाग, इलाहाबाद–211006

साहित्य श्री तथा समाज श्री–२००४ हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं

हिन्दी मासिक पत्रिका **"विश्व स्नेह समाज"** ने जी.पी.एफ.सोसायटी के सहयोग से इस वर्ष रचनाकारों व समाज सेवियों को प्रोत्साहित करने हेतु साहित्य श्री व समाज श्री से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं. इसमें 5000/–रुपये का नगद पुरस्कार व प्रमाण–पत्र तथा 10 रचनाकारों व समाजसेवियें को अन्य सम्मानों से सम्मानित करने का निर्णय लिया हैं.

इसमें रचनाकारों से फोटो, परिचय सहित अपनी पंसद की कोई भी दस कविता/ग़ज़ल/कहानियॉ/लेख मौलिकता के प्रमाण–पत्र के साथ आमंत्रित करता हैं तथा समाज सेवियें से भी फोटो, परिचय सहित समाज सेवा में विगत पॉच वर्षो में किये गये योगदान की विस्तृत रिर्पोट सहित आमंत्रित करता हैं. प्रवेशियों को स्टेशनरी, डाकव्यय सहित 100रुपये प्रवेश शुल्क अपेक्षित है. शुल्क मनिआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट 'विश्व स्नेह समाज' के नाम से देय होगा. अपनी प्रविष्टिया **हमें निम्न पते पर भेजें:– सम्पादक**, मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

fgUnh lsokdsrRij i=&if=dk,a

✍ श्रीमती जया शुक्ला

1.राष्ट्रभाषा मूल्यः 8.00रु.
संपादकः श्री अनन्त राम त्रिपाठी
वर्धा से प्रकाशित यह पत्रिका अपने 49 वसन्त पूरे कर चुकी हैं. इस पत्रिका का हिन्दी के विकास में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान हैं. एक सुन्दर आवरण को लिए हुए यह पत्रिका हिन्दी के विकास के लिए अक्सर आवाज उठाती रहती हैं.यह हिन्दी प्रेमियों के बहुत ही अच्छी पत्रिका हैं.

2. सहकार मूल्यः 21.00रु0
संपादकः श्री भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
सिविल उन्नाव से विगत दस वर्षो से प्रकाशित यह साहित्यिक पत्रिका एक अच्छे कलेवर को लिए हुए हैं. इसमें स्तरीय, पढनीय लेख, कहॉनिया, व्यंग्यों के साथ समीक्षा एं भी रहती हैं. यह प्रत्येक वर्ग के पाठक के लिए अच्छी व पठनीय पत्रिका हैं. ऐसी पत्रिकाएं देखने व पढ़ने को कम ही मिलती हैं.

3. यू.एस.एम पत्रिका मूल्यः 15.00
संपादकः श्री उमांशकर मिश्र
1984 से नेहरु नगर, गाजियाबाद से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका अपने आप में अथाह सागर हैं. इसके प्रत्येक अंक एक से बढ़कर एक विस्मरणीय होते हैं. इसके संपादक को अपना एक अलग ही मुकाम हासिल हैं. वे हिंदी के विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं. प्रत्येक वर्ष देश के कोने–कोने से हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वानों को आमंत्रित कर उन्हें पुरस्कृत करते हैं तथा हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं. इनकी पत्रिका पढनीय व संग्रहणीय हैं.

4. समाज प्रवाह मूल्यः 10.00
संपादकः मधु श्री काबरा
गणेशबाग, जवाहर लाल नेहरु रोड, मुलुडं, मुबंई से विगत 21 वर्षो से प्रकाशित 28पृष्ठों की यह पत्रिका स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं. इसका प्रत्येक अंक अपने आप में अनूठा होता हैं. अंक को देखकर ऐसा लगता है कि लेखन अभी जिंदा हैं.

5. वनौषधि माला मूल्यः निशुल्क
संपादकः महावीर आजाद शास्त्री
एम.सी.कॉलोनी, चरखी दादरी से प्रकाशित यह साप्ताहिक पत्र औषधियों के बारे में जानकारी के लिए बहुत ही अच्छा हैं. इसमें भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के बारें में तथा जनमानस में उपलब्ध सामग्री से औषधि निर्माण के बारे में विस्तृत जानकारी समाहित रहती है.

6. रामपुर समाचार मूल्यः 1.00
संपादकः ओमकार शंरणं ओम
लेटेस्ट आफसेट प्रिन्टर्स, रामपुर से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक रामपुर क्षेत्र ही विस्तृत जानकारी को समेटे हुए रहता हैं. राजनैतिक व सामाजिक लेखों से परिपूर्ण यह साप्ताहिक पत्र अपनी सेवा के 43 वर्ष पूर्ण कर चुका हैं.

7. नई शिक्षा मूल्यः 15.00
संपादकः श्री कैलाश चतुर्वेदी
उगम पथ, वानीपार्क, जयपुर से प्रकाशित यह हिन्दी पत्रिका विगत 53 वर्षो से निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं. तथा मानव समाज की मूलभुत आवश्यकता शिक्षा से संबंधित हैं इसमें शिक्षा में सुधार, विद्यार्थियों की समस्याएं आदि को समाहित किये हुए रहती हैं.

8. साहित्य सागर मूल्य5 20.00
संपादकः श्री कमलाकांत सक्सेना
नीलकमल काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित यह हिन्दी मासिक पत्रिका हिन्दी के विकास में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं. इस पत्रिका का प्रत्येक अंक हिन्दी सेवा विशेषांक होता हैं.

9.हिन्दी प्रचारक वार्षिक मू0: 25.00
संपादकः श्री विजय प्रकाश बेरी / अनिल बेरी
हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, पिशाचमोचन, वाराणसी से विगत 31 वर्षो से प्रकाशित पत्रिका में हिन्दी के संग्रह, किताबों का मासिक लेखा जोखा दिया रहता हैं. हिन्दी प्रेमियों के लिए यह बहुत ही अच्छी पत्रिका हैं.

10. कालान्तर मूल्यः 15.00
संपादकः डॉ0 पुष्पेश पंत
कालान्तर प्रकाशन, बंगाली मार्केट, नई दिल्ली से विगत चार वर्षो से प्रकाशित यह हिन्दी मासिक पत्रिका राजनीति, व्यंग्य, व्यंजन, वार्ता, पुस्तक समीक्षा से युक्त होती हैं. प्रत्येक सामग्री पठनीय व स्तरीय हैं.

11. दिव्य युग मूल्य : 6.00
संपादकः जगदीश दुर्गेश जोशी
मिश्र नगर, अन्नपूर्णा मार्ग, इन्दौर से विगत 20 वर्षो से प्रकाशित हिन्दी मासिक पत्रिका मूलतः अध्यात्मक से जूड़ी हुई हैं इसमें घर परिवार, युवामंच, बालवाटिका सहित अन्य अच्छे स्थाई स्तम्भ भी हैं. इसमें लगभग सबकुछ समाहित हैं.

12.समय सुरभि मूल्यः 20.00
संपादकः श्री नरेन्द्र कुमार सिंह
शिवपुरी, बेगूसराय से विगत 7वर्षो से प्रकाशित यह हिन्दी पत्रिका अपने आप में परिपूर्ण हैं. इसमें एक आदमी के पढ़ने के लिए सब कुछ समाहित हैं. पढ़ने वाला ऐसा कोई भी वर्ग नहीं होगा जिसके लायक पढनीय सामग्री न मिलें

13. विज्ञान मूल्यः 20.00
संपादकः डॉ0 शिवगोपाल मिश्र
विगत 90 वर्षो से विज्ञान परिषद इलाहाबाद से प्रकाशित यह मासिक पत्रिका हिन्दी के माध्यम से विज्ञान के प्रचार प्रसार में लगी हुई हैं. इसमें विज्ञान से सबंधित जानकारी हिन्दीं में उपलब्ध रहती हैं.**शेष पृष्ठ 25 पर.....**

द हंगामा इंडिया

iklZydjusoysusdsHkhiSls

भारत सरकार के मुख्य विभाग रेलवे में भ्रष्ट्राचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका हैं. यहाँ कोई भी काम बिना पैसे के नहीं होता है. अगर आपको पार्सल करना है तो पार्सल की सरकारी फीस के अतिरिक्त सुविधा शुल्क की मांग अलग से की जाती हैं. अगर आपने पार्सल कहीं भेजा है तो उसे छुड़ाने के अलग से पैसे की मांग की जाती है. पैसा नहीं देने पर पार्सल अभी नहीं आया है या पार्सल में यह कमी है वह कमी है का बहाना बनाया जाता हैं.

उत्तर मध्य रेलवे के मुख्यालय इलाहाबाद जहाँ महाप्रबंधक स्वयं बैठते हैं की नांक के नीचे भी यह धंधा जोरो से चल रहा हैं. मना करने पर कहां जाता है सभी देते हैं हम आपका पार्सल किये हैं कुछ तो दीजिए. यहां आपके समान के हिसाब से 10 रुपये से लेकर 10000 हजार रुपये तक की मांग होती हैं. बाकी वहां दलाल बैठे हैं वे सौदा कर बीच का रास्ता निकाल हीं लेते हैं. आपको पार्सल करना है तो सुविधा शुल्क देना हीं पड़ेगा. नहीं देगें तो पार्सल आपका नहीं जा पाएगा. ऐसी ही शिकायतें अन्य रेलवे के अन्य सेक्शन से भी मिली हैं.

राष्ट्रीय एकता एवं शांति सौहार्द यात्रा बरहज से लखनऊ तक

सौरभ कुमार तिवारी, ब्यूरो बरहज

राष्ट्रीय एकता एवं शांति सौहार्द यात्रा का शुभारम्भ बरहज में शहीद स्मारक से स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री नागेश्वर विश्वकर्मा ने हरी झण्डी दिखाकर की. यह बरहज से लखनऊ तक जाएगी.

सभा में बोलते हुए मुख्य अतिथि श्री विश्वकर्मा ने कहा कि मैं ऐसा भारत देखना चाहता हूँ कि हर धर्म के लोग एक ही गिलास में पानी पिये. ऐसा तभी हो सकता है जब नौजवान जागरुक रहे. हमें जाति, धर्म के नाम पर नहीं लड़ना चाहिए. सभा में बोलते हुए श्री ब्रजराज सोनकर ने कहा कि जब–जब देश को नवजवानों की आवश्यकता होती है वे हर समय तैयार रहते हैं अगर ये जागरुक हो जाये तो जो लोग भाई–भाई के बीच दरार डाल रहे हैं वे कभी सफल नहीं होगें. राष्ट्रीय सेवा संस्थान कें संरक्षक राधा रमण पाण्डेय, अध्यक्ष गजानन्द मौर्य व संस्था के सदस्यों ने मुख्य अतिथि का माल्यार्पण किया.

इस अवसर पर कैलाश चन्द्र शुक्ल, डॉ. जमलुरहमान, रामनरेश तिवारी, डॉ0 अमरेश सिंह, जगदीश जायसवाल, धर्मवीर राजन मद्धेसिया, अमित मद्धेशिया, ब्रजराज सोनकर सहित सैकड़ों की संख्या में आम नागरिक उपस्थित थे. उन्होंने अपनी शुभकामनाएं दी. कार्यक्रम का संचालन श्री राकेश त्रिपाठी ने किया.

dqM+as dk <sj cuk gS nsofj;k lnj jsyos LVs'ku

ब्यूरो देवरिया

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बाबा राघव दास की कर्मस्थली, स्वतंत्रत्रा के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले, एक से बढ़कर एक नेता को जन्म देने वाला गोरखपुर मंडल का एक महत्वपूर्ण जिला देवरिया जो स्व. राजमंगल पाण्डेय का चुनाव क्षेत्र रहा है तथा महान समाजवादी नेता मोहन सिंह का वर्तमान में ससंदीय क्षेत्र हैं, के मुख्यालय देवरिया सदर का रेलवे स्टेशन कुड़े की ढेर में तब्दील हैं. मुख्य सड़क से स्टेशन की ओर मुड़ते ही बदबू से नाक बंद करना पड़ता हैं. जैसे–जैसे आप स्टेशन की तरफ आगे बढ़ेगे कुड़े व बदबू की मात्रा क्रमशः बढ़ती ही जाएगी. प्लेट नं. 1 पर कुड़े का ढेर सुबह से लेकर शाम तक देखा जा सकता हैं.

जानकारी के लिए बता के बौद्ध निर्वाण स्थल जहाँ देश–विदेश से सैकड़ो यात्री प्रतिदिन आते हैं उसका भी लिंक मार्ग यही स्टेशन है, इसके अलावा जैन धर्मावलंबियों सहित बिहार राज्य से जोड़ने का यही इकलौता मार्ग हैं. प्लेट नं0 1 अलावा दूसरे प्लेट फार्मो की तो बात ही छोड़िए. टिकट खिड़की के प्रवेश द्वार पर अंधेरे में नहीं जा सकते. अगर आप गये तो पेशाब व लैट्रिन के सम्मिश्रण से सराबोर हो जाएंगे.

अगर खुद न खास्तें बरसात हो गयी तो यह कोढ़ में खाज का काम करती हैं. प्लेट फार्म के ऊपर बरसने वाला एक भी बूँद पानी स्टेशन से बाहर नहीं जाता. यात्रियों को खड़े होने भर को जगह नहीं मिलेगी. उस पर से कूड़े का ढ़ेर बची खुची जगह को भी नर्क बना देते हैं.

कुलकर्णी ने मण्डप से अपने लड़के को उठाते हुए कहा, "यह शादी हर्गिज नहीं हो सकती." क्या कह रहे हैं आप कुलकर्णीजी, ज़रा मेरी इज्ज़त की भी तो सोचिए, लड़की के पिता ने हाथ जोड़कर कहा. नहीं, मैं ऐसे झूठे और धोखेबाज व्यक्ति की बेटी को अपनी बहू नहीं बना सकता, जिसने शादी तय करने से पहले मुझे कहा कुछ और अब मण्डप के समय अपना रंग बदल लिया.

इधर मण्डप से थोड़ा हटकर बीच शादी के इतना विवाद हो रहा था और उधर दुल्हा–दुल्हन आसमंजस्य में शंशकित से एक दूसरे का मुंह देख रहे थे. विवाह मं आए सभी मेहमानों में भी आपस में काना–फूसी होने लगी थी.

अरे भाई, लगन का मुहुर्त निकला जा रहा है, और आप लोगों की बात खत्म ही नहीं हो रही हैं. पंडित जी तेज स्वर में कुलकर्णी की ओर देखते हुए बोले. तुम चुप रहो पंडित! ये शादी तो अब तभी होगी जब यह दीनदयाल मुझसे किया अपना वादा पूरा करेगा. यह कहकर वह पत्नी से कुछ बात करने लगे. उनके पीछे–2 दीनदयाल और उनकी पत्नी भी आ गए. कुछ तो सोचिए कुलकर्णी जी, मेरी बेटी का क्या होगा, हॉ मैंने आपसे वादा जरुर किया था पर अपनी कोशिश करने के बावजूद भी आपकी मांग पूरा करने में असमर्थ रहा, पर यकीन मानिए मैं 2,4 महीने में वो भी पूरी कर दूॅगा, पर अभी तो यह लगन हो जाने दीजिए. हर्गिज नहीं! अबकी श्रीमती कुलकर्णी आगे बढ़ी. हम तुम जैसे भिखारियों के यहॉ रिश्ता तय नहीं कर सकते. चलो जी बारात वापस लौटा ले

fHk[kkjhdkSu\

जागृति नगरिया

चलों. इतना कहकर उन्होंने अपने बेटे को जो अभी कुछ माज़रा भी न समझा था उठाकर कार में बिठा दिया और पूरी बारात उसी क्षण वापस लौट गयी. जिस जगह शादी की शहनाई गॅूज रही थी वहॉ मातम छा गया. जहॉ पवित्र मन्त्रों का जाप हो रहा था वहीं लोगों के कहे–सुने, व ताने गॅूजने लगे. जो दीनदयाल और उसकी पत्नी अपनी बेटी को विदा करने पर रोते वहीं अपनी को विदा न करने पर बिलख–2 कर खून के ऑसू रो रहे थे.

बेचारी दूल्हन! वह तो मण्डप में बैठे–2 यही सोचकर ऑसू बहाती रही कि आखिर में सही मायने में भिखारी था कौन? उसके पिता या वो कुलकर्णी जो अपने हाथों को फैलाये उसके पिता से दहेज की भीख मॉग रहा था. वो भी उसके दरवाजे आकर. आखिर सचमुच कौन था वास्तविक भिखारी??

pan'ksj

जिनकों उस्ताद मिल नहीं पाता
फ़न उन्हें उम्र भर नहीं आता।

———————————————

तुम खेल समझते हो रुबाई कहना
ये काम नहीं दोस्त तुम्हारे बस का
मत बहरे–ख़फ़ीक़ को 'रुबाई'समझो
होते हैं रुबाई के औज़ान जुदा।

'ख़्वाब' अकबराबादी, आगरा

अभी तो इनकी ऑख नहीं खुली
कैसे बता दें–अंगारें कैसे दहकते हैं?

शोभा, आर.जेड.डी / 21ए,
डाबरी एक्सटेंशन, नई दिल्ली–45

हादसे

हादसे हो चुके वतन में बहुत
आगे हों ही नहीं, कोशिशे चाहिए।
हादसों से बढ़े फासले भी बहुत,
फासले अब नहीं फैलना चाहिए।
हादसे की हदें सबने देखी बहुत,
चुप बैठे नहीं तोड़ना चाहिए।
हादसों ने दिया दहशतें भी बहुत,
हाथ मलना नहीं मारना चाहिए।
हादसों में हुई नफरतें हैं बहुत,
कहीं पोसे नहीं मेटना चाहिए।
हादसा वो हठी हिंसाएं की बहुत,
दंगे हों न कहीं सोचना चाहिए।
हादसों ने यहॉ चैन लूटा बहुत,
हाय करना नहीं, षरोकना चाहिए।
हादसों में मिटी हयातें भी बहुत,
होश खोना नहीं, चेतना चाहिए।
हादसा ज्यों गुना मन रोया बहुत,
हाथ जोड़े नहीं फैसला चाहिए।
हादसों में दिखा हठधर्मिता बहुत,
किले हवाई नहीं हथगोले चाहिए।
हादसों से मिला खतरा भी बहुत,
हाथ खींचे नहीं हराना चाहिए।
हादसों से हत हताहत बहुत,
हवा बॉधे नहीं हतना चाहिए।
हादसों को सहा मौना साधा बहुत,
होंठ सिलना नहीं बोलना चाहिए।
हादसों से मिटे सपने भी बहुत,
स्वप्न खोना नहीं देखना चाहिए।
हादसों में हुआ "रचश्री' जख्मी बहुत
घाव देखें नहीं इनक़लाब चाहिए।

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
एल.आई.यू.,कोतवाली कैम्पस,
फतेहगढ़, 209601

बेगानें भी साथ चलेंगें

जितने गहरे शूल चुभेंगें,
उतने समतल पाथ मिलेंगें।
श्रम का साथ कभी ना छोड़ो,
मरुस्थल में भी फूल खिलेंगें।
अपनों से उम्मीद ना करना,
वर्ना छाती मूंग दलेंगें।
अँधियारें से मत घबराना,
अभिलाषा के दीप जलेंगें।
कितने दुख है इस जीवन में,
खुद पे हॅसना, लोग हॅसेंगें।
चौकन्ने जब नहीं रहोगे,
आस्तीन में सॉप पलेंगें।
प्रेम की भाषा रट लो 'सूना'
बेगाने भी साथ चलेंगें

प्रकाश सूना
मुरलीधर सदन, 187—बी, गॉधी कॉलोनी, निकट गॉधी वाटिका, मुजफ्फरनगर, 251001

dkxk fdldk D;k gj ysrk

कागा किसका क्या हर लेता।
काली कोकिल क्या देती हैं।।
अपने अपने जीवन में,
हर कोई जीता पलता।
भूख प्यास की तृष्णा,
एक सी रखती है समता।
प्याल भरे क्या हर लेती है।
काली कोकिल क्या देती है।।
नील गगन का पंक्षी,
मन मस्त है चहकता।
गर है केवल—ऐसा,
जो जड़्वत सोता रहता।
जीवन मरण की क्या हेती है
काली कोकिल क्या देती है।।
गुफा और कन्द्राओं में,
है ऋषि और सन्यासी।
ऊंचाई और गहराई का,
जो रखते ज्ञान अम्पक्षी,
उनके लिए क्या खेती है।
काली कोकिल क्या देती है।।
खगोल और भूगोल में,
समिश्रित पाताल है,
जितने हैं जन जीवन,
एक ही प्रतिपाल है।
पर आश भरोसा क्या सेती है
काली कोकिल क्या देती हैं।।

राजेश कुमार सिंह
बायोवेद शोध फार्म प्रभारी, 103/42, मोतीलाल नेहरु रोड, प्रयाग, इलाहाबाद

पारदर्शी—कवित्त

नकटों की नाक काटो, सवा गज बढ़ जाए,
इस कान से सुनते, उससे निकाले हैं।
मनमानी लूटपाट, मची यहॉ घाट—घाट,
डस रहे बनकर, नाग काले—काले हैं।
मूल—धन को गॅवाया, कर्ज़दारी को बढ़ाया,
घाटे—दर—घाटे खाते, निकाले दिवाले हैं
जिस देश में लठैत—डकैत भी राज करें
पारदर्शी जनता के, राम रखवाले हैं।

ॐ पारदर्शी
पारदर्शी साधना केन्द्र, 261, उदयपुर

सूचना पत्रकारिता का शेष...

बचत हो रही है. कम्प्यूटर से संदेश देने और संदेश प्राप्त करने का कार्य एक साथ किया जाता हैं. लगता है मानव प्रकृति एक साथ ही मशीन में उतर गयी आयी हैं. कम्प्यूटर द्विभाषिए का भी कार्य करता हैं. साथ ही मुद्रण, टंकण, सूचना—संचयन, कोश संकलन, भाषा शिक्षण, पत्रिका सम्पादन आदि कार्य एक साथ ही किया जा सकता हैं. कम्प्यूटर के माध्यम से आज भाषा का मानकीकरण सम्भव हो सका हैं. मानकीकरण का तात्पर्य भाषा के एकरुप शब्दावली से हैं जैसे स, ष, श में एक ही स को अपनाना उचित होगा. इस दृष्टि से देवनागरी लिपि कम्प्यूटर के लिए सबसे अनुकूल हिन्दी शब्दावली का अंग्रेजी शब्दावली की अपेक्षा अधिक आसानी से हो रहा हैं.

प्रवक्ता, हिन्दी, नेहरु कॉलेज, पो.पैला पुल, जिला—कछार, असम

हाइकु गीत

[kq'kcwdkxkWoclkyks

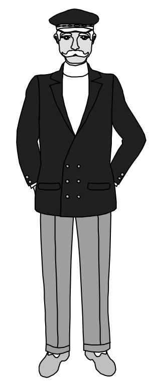

फूल खिला दो
ढेंरो कि खुशबू का
गॉव बसा लो!
कॉटे खुद लो
दूसरों की झोली में
कुसुम डालो!
औरों का दुःख
झेल कर कुछ तो
खुशियां पा लो!
सुबह शाम
पंछी के संग गीत
प्रभु का गा लो!
पेड़ बन के
ऑधी तूफां तमाम
अरे थाम लो!

नलिनी कान्त
अंडाल, पं. बंगाल—713321

पाठको से निवेदन

प्रिय दोस्तों हिंदी विशेंषाकं निकालने व बीच में चुनावी माहौल आ जाने के कारण स्थान का अभाव था. इस कारण हम कुछ स्थाई स्तम्भ इस अंक में नही दे पा रहे हैं. हमारा पूर्ण प्रयास होता है कि हम अपने पाठकों को सभी स्तम्भ अवश्य दें. आगे से हमें इसे निरंतर बनाये रखेंगें. अपना सहयोग व सानिध्य बनाएं रक्खें. आपको जानकारी के लिए हम बता दे हम अपने सुविद्वय पाठको की लंबी मांग को देखते हुए अगले अंक से कुछ और नए रोचक, विस्मरणीय स्थाई स्तम्भ देने जा रहे हैं. आशा है आपको ये पंसद आएगें.

संपादक

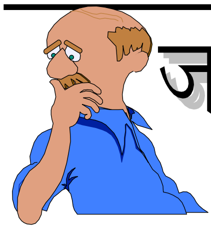

जरा हंस दो मेरे भाय

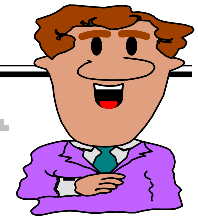

☠ दामाद ने अपनी सास से कहा– आपने तो कहा था कि आपकी लड़की शाकाहारी हैं.
सास बोली– पक्का शाकाहारी है बेटा.
दामाद ने कहा– आपकी बेटी पूरे दिन मेरा दिमाग खाती रहती है, फिर वह शाकाहारी कैसे हुई?

☠ पत्नी पति से नाराज थी. पति ने घर फोन किया– आज खाने में क्या बना रही हो?
पत्नी गुस्से से बोली–जहर
पतिदेव ने कहा–ऐसा है, आज सिर्फ अपने लिए ही खाना बनाना. डिनर मैं आज दोस्तों के साथ लूंगा.

☠ बेटा–पिताजी एक आदमी एक से अधिक शादी क्यों नहीं कर सकता हैं?
पिता– कानून की वजह से. बड़े होकर तुम भी समझ जाओगे कि जो अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकता, उन्हें कानून बचाता हैं.

☠ मालिक– हमें नौकर की जरुरत है, लेकिन हम ऐसा नौकर चाहते हैं जो कंजूस हो.
नौकर–कंजूसी के कारण ही तो मैं पिछली जगह से निकाल दिया गया.
मालिक – वह कैसे?
नौकर– दरअसल मैं गंदे हो जाने के डर से अपने कपड़े न पहनकर मालिक के कपड़े पहन लिया करता था.

चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में
खुल गया कपड़ो का भव्य शो रूम

IWWMsUV~l VsylZ] 'kxqupkSdchubZ HksaV

THE REVISIT SHOP
Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद
फोन : 2608082

☠ एक वकील ने अपना दफ्तर खोला. दूसरे ही दिन एक आदमी आता दिखाई दिया. जैसे ही वह अंदर घुसने लगा, वकील टेलीफोन उठाकर बोला–देखो, सेठ मनोहर लाल से कहो कि वह अपील मय खर्चे के जीत गए हैं. फिर उसकी ओर देखकर बोला–जी जनाब, फरमाइए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?
आने वाला हिचकिचाते हुए बोला– कुछ नहीं साहब, मैं तो आपका टेलीफोन कनैक्शन लगाने आया था.

☠ साइकिल वाले की टक्कर से पैदल चलने वाला युवक लुढ़क गया, लेकिन साईकिल वाला प्रसन्न होकर बोला, यह तुम्हारे लिए भाग्यशाली दिन हैं.
अपने हाथों से घुटनों को सहलाता हुआ वह आदमी झुझलाया–वह कैसे?
साइकिल वाला बोला–क्योंकि आज मेरी छुट्टी हैं. मैं ट्रक ड्राइवर हुं.

इस स्तम्भ में आप भी अपने पंसद के चुटकुलें भेज सकते है। अच्छे चुटकुलों को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

पाठको से अपील

पत्रिका की प्रसार संख्या बढ़ाने में सक्रिय सहयोग देने की अपील अपने सम्मानित पाठको से हम पहले से करते आ रहे हैं, लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर हमारी अपील पर समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा हैं प्रसार संख्या में बढ़ोत्तरी ही पत्रिका की निरन्तरता की गारण्टी बन सकती है. इसलिए पत्रिका के शुभ–चिन्तकोंसहयोगियों और पाइकों से हमारा विनम्र आग्रह है कि वे स्वयं तो पत्रिका से जुड़े ही/जुड़े रहे, अपने परिचितों तथा इष्ट मित्रों को भी वार्षिक, द्विवार्षिक, आजीवन सदस्यों के रुप में जोड़ने का हर सम्भव प्रयास करें

इसके अलावा पत्रिका का आप स्वयं अपने विज्ञापन तो दे ही, संस्थाओं, संस्थानों, उद्योग धन्धे, फर्मो आदि से भी दिलाएं विज्ञापन दरें इस प्रकार है–'

अन्तिम आवरण पृष्ठ (रंगीन) : 6000.00 रु. (एक रंग में)
तीसरा आवरण पृष्ठ " 4000.00 रु. "
द्वितीय आवरण पृष्ठ " 5000.00 रु. "
नोटः प्रति अतिरिक्त रंग के लिए 10 प्रतिशत राशि अधिक देनी होगी.
साधारण पृष्ठ पूरा : 3000.00 रु0
साधारण पृष्ठ आधा : 1500.00रु0.

श्रीमती जया शुक्ला, प्रबंध सम्पादक/विज्ञापन प्रबंधक

rukolsdSlsik,afutkr

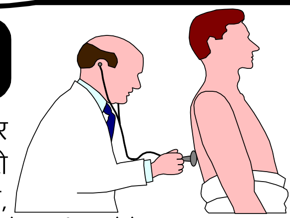

अगर आपको नींद ठीक से ना आए, चिड़चिड़ाहट महसूस हो, भूख ना लगे, शरीर में ऊर्जा की कमी हो, मानसिक और शारीरिक तनाव हो, तो इसका अर्थ है कि आप तनाव यानी स्ट्रेस में है. स्ट्रेस का असर हमारे रोजमर्रा के कामों पर पड़ता है. स्ट्रेस के लिए दवाइंया लेना बहुत कारगर नहीं रहता, दूसरे दवाइया लेते रहने से उनकी आदत पड़ जाती हैं.

कुछ घरेलू उपाय

0 नियमित रूप से ऐसा शारीरिक श्रम करें, जिसमें दिमाग भी सक्रिय रहे. तैराकी, बागवानी और योग काफी कारगर रहते हैं.

0 मालिश भी स्ट्रेस दूर करने में काफी लाभकारी रहती है. कंधे, गर्दन, पीठ और पांव काफी संवेदनशील होते हैं. चंदन, गुलाब या लेंवेडर के तेल से इनकी मालिश करें.

0रात को सोते समय हल्के गुनगुने पानी में कुछ बूंदे चमेली या रोजमेरी के तेल डालें. अगर ये उपलब्ध ना हों, तो तेज गर्म पानी में एक डंडी तुलसी की पत्तियों की डालें. कुछ देर ढ़कर कर छोड़े. फिर अपनी सुविधा के अनुसार तेज गर्म पानी से नहाएं.

0 शहद को भी स्ट्रेस कम करने में काफी सहायक माना जाता है. जब भी थकावट महसूस हो, एक चम्मच शहद लें.

0 हर्बल टी स्ट्रेस के लिए हमेशा फायदेमंद रहती है. इसके अलावा गुनगुने दूध ा से बेहतर तो कोई उपाय हो हीं नहीं सकता. सोने से पहले गुनगुने दूध में चुटकी भर दालचीनी पाउडर और एक चम्मच शहद मिला कर पिंए.

इसके अलावा अपने खानपान में खनिज व विटामिन तत्वों की भरपूर मात्रा लें. चाय, कॉफी, मादक पदार्थों व सिगरेट का सेवन अधिक ना करें. लो ब्लड शुगर भी स्ट्रेस बढ़ाता है. जीवनशैली में कुछ फेर बदल कर आप स्ट्रेस को अपनी जिंदगी से दूर कर सकते हैं.

fgUnh lsdkdsrRij dk 'ks'k

20dk--होती है

14. आइना बोलता है मूल्यः 1.00
संपादकः श्री अजय शर्मा
पुष्पांजली एन्क्लेव, अलीगढ़ से विगत 5वर्षो से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक पत्र अपने नाम के अनुरुप अपनी बात को रखने का पूर्ण प्रयास करता हैं. आमजन के लिए इस पत्र में भरपुर सामग्री हैं.

15.वाई सा मूल्यः वार्षिक 95.00
संपादकः श्रीमती सरिता भूतड़ा
उज्जैन से प्रकाशित यह पत्र महिला जगत के लिए बहुत ही अच्छा पत्र हैं. यह पत्र महिलाओं के अधिकारों व जानकारी के लिए पर्याप्त सामग्री देता है

16. कलमदंश मूल्यः पंचवर्षीय 200.0
संपादकः अख़गर पानीपती
पानीपत हरियाणा से प्रकाशित यह पत्र काव्य प्रधान पत्र हैं. इसमें आपको देश माने–जाने कवियों की रचनाएं पढ़ने को मिल सकती है.

17. विप्र पाचजन्य मूल्य : 100 वार्षिक
संपादकः पं. भालचन्द्र शर्मा
शिक्षक कॉलोनी, नीमच, से प्रकाशित यह पत्र विविधिता से परिपूर्ण हैं.

18. साहित्य सेतु सागर मूल्यः 5.00
संपादकः प्रभाकर शेजवाडकर
अहिन्दी भाषी क्षेत्र गोवा से प्रकाशित यह मासिक पत्र विगत 9 वर्षो से प्रकाशित हो रहा हैं. गोवा जैसे अहिन्दी भाषी जैसे क्षेत्र में कार्यकर हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं.

19.पनघट मूल्य : 12.00
संपादकः जवाहर लाल बेकस
विगत 17 वर्षो से नोखा, रोहतास, बिहार से प्रकाशित यह त्रैमासिक पत्रिका अपने आप में गागर में सागर को समाहित किए हुए हैं. इस पत्रिकाा में लेख लघु कथाएं, व्यंग्य, विविध सामग्री पढ़ने को मिल जाएगी.

20. लोकयज्ञ मूल्य : 5.00
संपादकः श्री सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत'
अहिन्दी भाषी क्षेत्र बीड, से प्रकाशित हिन्दी मासिक लोकयज्ञ विगत 3 वर्षो से प्रकाशित हो रही हैं. यह मराठवाणा क्षेत्र में हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार कर रही हैं. यह पत्रिका इतने कम समय में ही लगभग काफी अहिन्दी / हिन्दी राज्यों में बड़े चाव से पढ़ी जाने लगी हैं. इतने कम समय में जो लोकयज्ञ मासिक की पहचान बनी है वह सपांदकीय परिवार की कड़ी लगन व मेहनत का ही प्रतिफल जान पड़ता हैं. यह पत्रिका प्रत्येक वर्ग के पढ़ने लायक हैं.

21.दिव्य प्रभा मूल्य : 25.00
संपादकः मुनीर बख़्श आलम
सोनभद्र से प्रकाशित यह पत्रिका अपने आप में अध्यात्म को समाहित किए हुए हैं आध्यात्मिक जगत की अच्छी पत्रिकाएं गायत्री परिवार की छोड़कर और कहीं देखने व पढ़ने को कम ही मिलती हैं. परंतु दिव्य प्रभा को देखकर लगता है कि वास्तव में पढनीय हैं.

22. सौगात मूल्यः निःशुल्क
संपादकः श्याम अंकुर
बारा राजस्थान से 5 वर्षो से प्रकाशित यह पत्रिका कम पृष्ठ की होने के बावजूद पठनीय सामग्री को समाहित किए हुए रहती हैं श्याम अंकुर जी की सम्पादकीय काफी उच्चकोटि की रहती हैं.

23. शुभ तारिका मूल्य : 10.00
सम्पादकः श्रीमती उर्मिकृष्ण

कातिल कौन?

वरुण सिंन्हा

इस्पेक्टर सिन्हा जैसे ही ज्वालापुर थाने में घुसता है कि टेलीफोन की घंटी बजती है ट्रन–ट्रन–ट्रन साहब मैं ज्वालापुर गॉव के खडहर से बोल रहा हुं. यहॉ किसी की लाश बोरी में बंद करके फेका हुआ हैं. आप जल्दी से आ जाइयेत्र. ठीक है तुम कहॉ से बोल रहे हो. साहब मैं इसी गॉव के एस.टी.डी. से बोल रहा हुं. ठीक है तुम वही ठहरों मैं अभी आया. इस्पेक्टर ज्वालापुर खंडहर पहुँचता है. वहॉ काफी लोग इकट्ठे होते हैं इस्पेक्टर आकर देखता हैं कि बोरी में लाश बंधी है,कई दिन हो जाने के कारण बदबू आ रही हैं. इस्पेक्टर हवलदार रामसिंह से बोला इस बंद बोरी को खोलों. बोरी खोलने के बाद एक आदमी के चार टुकड़े करके रक्खा हुआ है. लाश को पहचानना मुश्किल था. चेहरे पर बुरी तरह से चोट लगी हुई थी. इधर–उधर कपड़े खून से सने हुए थे. कपड़ें का रंग भी ठीक तरह से दिखाई नहीं दे रहा था.

कपड़े टटोलने के बाद उसकी जेब से ऐडेन्टी कार्ड मिलता है वो भी लाल लेकिन गौर से देखने के बाद पता चचलता है वह भारतीय फौज का सिपाही था. कार्ड देखने के बाद उस आदमी के घर का पता चल जाता हैं. इस्पेक्टर सिन्हा उस लाश को पोस्टमार्डम के लिए अस्पताल भेज देता हैं. पोस्टमार्डम के बाद उसके परिवारजनों को सौंप दिया जाता हैं. लेकिन यह पता नहीं चलता कि उस आदमी का खुन किसने किया हैं. इसी तरह से कई दिन बीत गए. इस्पेक्टर काफी चिन्ता में होता है, क्या कारण है अब तक कातिल का कोई पता नहीं लगा. इस्पेक्टर अपने घर आकर चुपचाप सो जाता है. इस्पेक्टर सिन्हा की पत्नी आकर पूछने लगती हैं क्या कारण है जो आप इतने चिन्तित हैं. इस्पेक्टर क्या पता नेहा आज से सात आठ दिन पहले ज्वालापुर खंडहर पर एक आदमी की लाशा खुन करके बोरी में बंद मिली थी. लेकिन लाख कोशिश करने के बाद में भी आज तक कातिल का पता नहीं लग सका. नेहा ने कहा–कहॉ का था वो आदमी. इस्पेक्टर वह आदमी तुम्हारे गांव का सुनील नाम का था. वो भारतीय फौज में था.

नेहा, क्या सुनील नाम का था. वैसे उसकी ड्यूटी जम्मू में थी. नेहा सुनील का नाम सुनकर चौक जाती है. क्या तुम उसको जानती थी. नेहा, हॉ. मैं जानती थी. हम दोनों कॉलेज में एक साथ पढ़े–लिखें थे. सुनील हमारे कॉलेज का सबसे अच्छा लड़का था. पढ़ाई लिखाई में भी तेज था. पढ़ाई करते–करते उसको आर्मी की नौकरी मिल गई. इस्पेक्टर सिन्हा पुरी रात उसके बारे में सोचते रहे कि उसका खुन किसने किया हैं. सोचते–सोचते अचानक ध्यान आता है कि हम लाश के पास इतने इकट्ठे लोग थे तो मैं पूछताछ कर रहा था देखा तो सब लोग डरे हुए थे. उस भीड़ में एक आदमी और उसकी पत्नी बार–बार अपनी जुबान से यही शब्द कह रहे थे कि इतना घटिया काम किसने किया. किसी राही को राह चलते मार देना कितना घटिया काम है. बार–बार अपनी जुबान से यही शब्द कह रह थे और चाय पानी के लिए पूछ रहे थे. कहीं उसीके काम तो नहीं है जो कत्ल कर दिय.

इस्पेक्टर सिन्हा अपनी पत्नी नेहा से कह रहा था तब उसी के काम हैं. वहॉ कम से कम हजारों लोग थे किसी को कोई मतलब नही बस दोंनो पत्नी पत्नी बोलते ही जा रहे थे. नेहा कहने लगी फिर तो उन्हीं दोनों के काम हैं.

अगले दिन इस्पेक्टर सिन्हा पॉच–सात पुलिस वालों को लेकर उसके घर पहुँचता है और दोनों पत्नी पत्नी कहने लगते है कि हमने कुछ नहीं किया और फिर पांच सात डंडे लगने के बाद दोनों कहते है कि हमें मत मारों हम साफ–साफ बताते है कि खुन हमने नहीं किया हैं. आज से दस दिन पहले की बातहै मैं और मेरी पत्नी फातिमा दोनों समान लिये इलाहाबाद से आ रहे थे. अचानक इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर एक आदमी दोनें हाथों में काफी समान लेकर ट्रेन में चढ़ा और आकर मेरे पास बैठ गया. हॅसते हुए मुझसे पूछा भाई साहब आपको कहॉ जाना है. ज्वालापुर. मुझे गढैया गांव में जाना है वैसे मेरा नाम सुनील है आपका नाम क्या है? अकबर खान यह मेरी पत्नी फातिमा हैं हम लोग इलाहाबाद से आए है इसी बीच सुनील ने हॅसते हुए कहा–क्या करें आखिरी गाड़ी हमारे गांव जाने वाली रात नौ बजे हैं. ट्रेन रात को 12 बजे ज्वालापुर रेलवे स्टेशन पर पहुचाएगी. रात रेलवे स्टेशन पर काटनी होगी. अकबर खान की पत्नी ने हमदर्दी दिलाते हुए कहने लगी रात काटने के लिए मेरा घर है आप हमारे घर को अपना घर समझ कर रात काट लेना. नहीं–नहीं मैं रात को रेलवे स्टेशन पर काट लूंगा.

नहीं सुनील अकबर खान को अपना भाई समझ एक रात तो क्या दस रात अपना घर समझ कर काट लेना. आने–जाने के लिए24 घंटो दरवाजा खुला हैं. मैंने सुनील की दरियादिली दिखाई ट्रेन लगभग एक बजे ज्वालापुर स्टेशन पर पहुँची. सुनील काकुद सामान मैंने अपने हाथ में ले लिया और अपने घरले आया. रात को आने के बाद हम तीनों भुखे थे.**शेष अगले पेज पर..**

jktHkk'kk fgUnh egRoiw.kZ rF;

दर्शन सिंह रावत

→हिन्दी की सरलता ने ही आज विश्व की प्रमुख भाषा बना दिया है.

→हिन्दी बोलने–समझने वालों की संख्या आज विश्व में सबसे अधिक हैं.

→यूनेस्कों द्वारा हिन्दी को तीसरी विश्व भाषा के रुप में मान्यता प्रदान की हैं.

→मारीशस, त्रिनीडाड, सूरीनाम,फिजी, गुयाना, नेपाल, कम्बोडिया में अनिवार्यता हिन्दी पढ़ाई जाती हैं.

→विश्व के 151 विश्वविद्यालय में इसका शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध कार्य किया जा रहा हैं.

→ब्रिटेन, फिजी, नेपाल, दक्षिण अफ्रिका, केन्या के निवासी इसे सम्पर्क भाषा के रुप में अपना रहे हैं.

→विश्व के कई प्रमुख शहरों से हिन्दी पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन हो रहा हैं.

→अब तक सात विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका हैं.

→ऐडवर्ड टेरी ने 1655 में भारत यात्रा के विवरण में लिखा है कि हिन्दी पूरे भारत की भाषा हैं.

→हिन्दी भाषा का पहला व्याकरण, हिन्दूस्तानी भाषा, शीर्षक से डच भाषा में जान जो शुआ केटलर ने सन् 1698 ने में लिखा था. फिर उसका अनुवाद लेटिन में हुआ.

→हेनरी थामस कोलब्रुक ने 1782 में कहा की जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत में करते हैं, वही हिन्दी हैं.

→हेरामिन लेवेफड ने सन 1785 में मद्रास आये और ब्रहमणों को गुरु बनाकर पुस्तकें लिखी इसकी भाषा बोलचालकी है.

→गिलक्राइस्ट ने 1787 में हिन्दी शब्द कोष का व्याकरण लिखा था.

सचिव, राष्ट्रीय हिन्दी सेवा महासंघ
ज–10, से5, हिरण मगरी, उदयुपर–313002

---

26 को शेष...फातीमा खाना बनाने जा रही थी तो सुनील ने खाना बनाने से मना करते हुए बोला कुछ मेरे पास मिठाईया है उस मिठाई को खा लेंगें. उसने अपना बक्सा खोला बक्से में रुपयों की गड्डी और कुछ सोने के गहने. उसने कहा की मेरी बहन की शादी है इसलिए कुछ कपड़े और गहने ले जा रहा हूँ उसे देखकर मेरा लालज बढ गया. मैंने सोचा सुनील भारतीय फौज में हैं शराब भी लाया होगा. उसने इसमें दो बोतले निकाली ओर बोला ये आपके लिए. फातीमा बोली आजी मैं दो गिलास लेकर आती हूँ तुम लोग यही बैठो. मैंने सुनील को खुब शराब पीलियी. उसके बाद उसे सुला दिया. रात को दोनों पत्नी पत्नी प्लान बनाकर उसको मार कर नदी में डाल देगें सुनील को सो जोन के बाद पत्नी पत्नी ने मिलकर सुनील के चार टुकड़े किये. लाश को बोरी में बन्द करके कन्धे पर डटाया और नदी की ओर ले चला लेकिन उजाला होने लगा. नदी यहां से 5 किमी..दूर थी. इसलिए उसने लाश को खंडहर में फेंक दिया. उसके बाद सारा समान निकाल कर बक्से को अपने आंगन में गढ्ढा खोद कर दबा दिया. इस्पेक्टर ने सारी बात पूछने पर अकबर और फातिमा को जेले भेज दिया. →

25 का शेष..कहानी लेखन महाविद्यालय, अम्बाला छानी से विगत 31 वर्षो से प्रकाशित इस पत्रिका का हिन्दी के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान हैं. स्व0 डॉ0 महाराजकृष्ण जैन ने जिस पौधे को रोपकर पाला–पोस उस पौधे को श्रीमती उर्मि जी भली भॉति पोषित कर रही हैं. इस पत्रिका के बारे में लिखने के लिए शब्दों का कोष मेरे शब्द कोश में नही हैं. सार संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि यह अपने आप परिपूर्ण हैं. इसके प्रत्येक अंक का प्रत्येक पन्ना पठनीय होता हैं.

24. सामायिकी मूल्यः

संपादकः श्याम सुन्दर सुमन

विगत पॉच वर्षो से भीलवाड़ा से प्रकाशित यह पत्रिका यद्यपि अनियतकालीन है, छोटी है फिर भी अच्छी हैं. हिन्दी की सेवा में पूर्णतया तत्पर दिखाई देती हैं.

25.रविन्द्र ज्योति मूल्य : 24 वार्षिक

संपादकः डॉ. केवल कृष्ण पाठक

विगत 34 वर्षो से प्रकाशित यह मासिक पत्रिका साहित्य को समर्पित जान पड़ती है.

26. सच का साया मूल्य : 1.00

संपादकः श्री उमाशंकर मिश्र

विगत 13 वर्षो से गाजियाबाद से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक पत्र ऐसे व्यक्ति के नाम से जुड़ा हैं जिसके बारे में हिन्दी सेवा के लिए कहना सूरज को दिपक दिखाने जैसा होगा. हिंदी सेवा में इनका अविस्मरणीय योगदान हैं.

27.हिमालय और हिन्दुस्तान वार्षिकः100

संपादकः डॉ. रवि रस्तोगी

विगत 12 वर्षो से उत्तरांचल से प्रकाशित यह पाक्षिक पत्र हिंदी के माध्यम से राजनीति को बयां करने वाला पत्र हैं.

28. विवरण मूल्यः 40 वार्षिक

संपादकः घोण्डीराव जाधव

हैदराबाद से विगत 29 वर्षो से प्रकाशित इस पत्रिका के लिए गारैव की बात है कि इस पत्रिका को प्रकाशित करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वित्तिय संहायता प्राप्त हैं.यह हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण पत्रिका है.

29. पर्यावरण डाइजेस्ट मूल्यः 10.00

संपादकः डॉ. खुशहाल सिंह पुरोहित

विगत 18 वर्षो से यह पत्र हिंदी के माध्यम से पर्यावरण के बारे में जानकारी देने के लिए बहुत ही अच्छा पत्र हैं. इसमें आम किसान के लिए भी बहुत कुछ रहता हैं.

vuks[kh 'ko ;k=k

रॉचडेल. यह अपने आप में अनोखी शवयात्रा थी. लोग गाड़ियों में सवार होकर घंटी बजाते हुए अंतिम संस्कार के लिए जा रहे थे. जहां जिसने देखा वहीं रुककर उस यात्रा की एक झलक पाने के लिए बेताब था. पिछले दिनों 68 वर्षीय डेरेक ग्रीनवुड की मौत हो गई. डेरेक आइसक्रीम बेचता था. उसकी मौत पर उसके साथियों ने अपने ही अंदाज में शवयात्रा निकाली. ताबूत को कॉरनेटो आइसक्रीम की शक्ल मे सजाया गया था. डेरेक अपने साथियों के बीच बेहद लोकप्रिय था. उसकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि शवयात्रा में कई आइसक्रीम वैन चल रही थी, जिस पर उसके मित्र सवार थे. डेरेक को संगीत से कुछ खास लगाव था, इसलिए शवयात्रा में लोग उसकी पंसदीदा संगीत द विजार्ड ऑफ वूज भी वजा रहे थे. डेरेक जिस वैन पर आइसक्रीम बेचता था, उसे भी इस शव यात्रा में शामिल किया गया था.

iSrhl djksM+ dk ,d flDdk

न्यूयार्क. एक छोटे सिक्के की कीमत ज्यादा से ज्यादा कितनी हो सकती है? अंदाजा लगा सकते हैं आप? अगर सिक्का सोन का हो और उसमें लगे सोने का मूल्य बीस डॉलर तकरीबन एक हजार रुपये हो, तब आप क्या कहेंगे?

जीं हा, 1933 में अमेरिका में ढाले गये होली ग्रेल नाम के इस सिक्के की नीलामी 35 करोड़ में हुई हैं. साठ साल पहले यहां एक टकसाल में ऐसे पांच लाख सिक्के ढाले गए थे. लेकिन तब राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रुजवेल्ट ने अमेरिका मे आई मंदी के कारण इन सिक्कों को व्यवहार में लाने के पहले ही गला देने का आदेश दिया था. उस वक्त एक सिक्का गलती से कहीं गुम हो गया था. तब से इसकी खोज की जा रही थी.

1996 में सिक्कों के एं संग्रहकर्ता स्टीफन फेंटन ने इसे अमेरिकी सीक्रेट सर्विस को बेचने की कोशिश की, तभी इस बारे में पता चल सका. पांच साल तक चले मुकदमें के बाद अदालत ने आदेश दिया कि नीलामी की आधी रकम फेंटन और आधी अमेरिकी कोष को दे दी जाए. यह दुनिया का अभी तक का सबसे मंहगा सिक्का बन गया हैं.

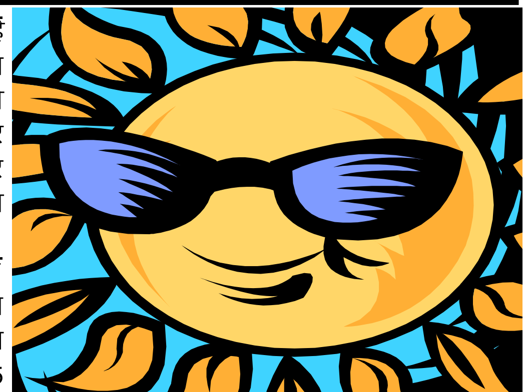

अब इसरों के नकली पैर

बंगलोर. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान इसरों एक नई तकनीक से नकली पांव तैयार करेगा. इन्हें जयपुर की भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के साथ एक अनुबंध भी किया है. नई तकनीक से बना पॉली यूरेथेन पांव जयपुर फुट से बेहतर साबित होगा. इसकी खासियत यह है कि यह वजन मं बहुत हल्का होगा और ज्यादा दिन तक चलेगा.

इस नए पांव पर बहुत से प्रयोग हो चुके हैं. रॉकेट मोटर बनाने में सफलता हासिल की है. यह नई तकनीक विकलांग सहायता समिति को मुफ्त में दी जा रही हैं. इससे विशेष तौर पर गरीब विकलांगों को मदद मिलेगी.

eSfpaxnwiV~Vk lsUVj dMkjaxkbZ dsUnz

स्क्रीन प्रिन्टिंग

dyj QksVks LVwfM;ks

पुरानी जीन्स पैन्ट, कॉटन पैन्ट, कॉटन शर्ट, गर्म शाल आदि की रंगाई गारन्टी युक्त. हर अवसर पर फोटो खींचने हेतु आपका दास तैयार है। कम्प्युटर कम्पोजिंग, डिजाइनिंग

सम्पर्क करें:

gjdhjr LdzhulZ ¼irfoUnj flag½
गुरू नानक नगर, गुरू द्वारा रोड, नैनी, इलाहाबाद–211008 मो. 9839749293

fgUnh fnol ij yksd;K if=dk dk ^fgUnh rq>s lyke^ dkO; fo'ks"kkad

लोकयज्ञ का लोकार्पण करते प्रा. ओमप्रकाश झंवर, प्रा.डॉ. हणमंलराव पाटील, डॉ. जी.एम.कुलकर्णी, डॉ. सुधाकरशेंडगें व संपादक प्रा. सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षत

बीड महाराष्ट्र की सामाजिक सांस्कृतिक व साहित्यिक पुनः निर्माण की प्रथम हिन्दी मासिक पत्रिका 'लोकयज्ञ' ने हिन्दी दिवस के अवसर पर अपना दूसरा राष्ट्रीय स्तर का काव्य विशेषांक 'हिन्दी तुझे सलाम' प्रकाशित किया.

इसका लोकार्पण प्रतिष्ठित कवि डॉ0 सुधाकरराव शैंडगें करते हुए कहा–'बीड जैसे अहिन्दी अल्पपरिचित छोटे से नगर से प्रा. सोनवणे राजेन्द्र 'अक्षतजी' ने लोकयज्ञ जैसी राष्ट्रीय पत्रिका निकालकर महान कार्य किया है. लोकयज्ञ पत्रिका ने अब तक कई विशेषांक निकाले हैं लेकिन आज यह जो 'हिन्दी तुझे सलाम' नामक हिन्दी दिवस काव्य विशेषांक निकला है, उससे सारा हिन्दी साहित्य लाभान्वित होगा. अक्षत जी ने बीड का नामा सारे देश में रोशन कर दिया है.

हिन्दी के प्रख्यात विद्वान डॉ. हणमंतराव पाटीलजी ने कहा कि–'यज्ञ की परम्परा हमारे देश में प्राचीन काल से रही आ रही है. यज्ञ के नाना प्रकार है. यज्ञ सद्भावनाओं का प्रतीक है. किसी की जिज्ञासा की भूख मिटाने के लिए किया जानेवाला यज्ञ 'ज्ञानयज्ञ' कहलाया. अक्षतजी की पत्रिका लोकयज्ञ यह काम लगातार तीन वर्षो से भारत में कर रही है. देश की बड़ी से बड़ी पत्रिकाओं के दिमाग में जो बात नहीं आई वह लोकयज्ञ ने साकार कर दी. अक्षत जी जैसा हिन्दी प्रेमी विश्व में ढूंढकर नहीं मिलेगा.

अध्यक्षीय समापन के अपने वक्तव्य में डॉ. जी.एम. कुलकर्णी ने कहा कि लोकयज्ञ पत्रिका ने अल्प समय में ही सारा हिन्दी क्षेत्र काबीज किया है, राष्ट्रीय स्तर पर इस पत्रिका ने अपनी अलग पहचान बनायी हैं.

हिन्दी तुझे सलाम के इस लोकार्पण समारोह का सुत्रसंचालन हिन्दी की छात्रा कु. रोहिणी घोडके ने किया. तो आभार प्रदार्शन प्रा. ओमप्रकाश झंवर ने किया. समारोह के लिए प्रा. लक्ष्मीकांत बाहेगव्हाणकर, प्रा. नारायण शिंदें, प्रा. गायकवाड जोगेन्द्र, प्रा. सुहास जोशी, प्रा. महेश देशमुख, प्रा. सौ. प्रेमा पांडेय, प्रा. सौ. कुरुडे सुनिता, प्रा. सौ. गोस्वमी मेघा, प्रा. सचिन कंदले आदि के साथ शहर के सभी महाविद्यालयों के हिन्दी के छात्र, शहर के गणमान्य नागरिक और हिन्दी प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित थे.

12okWa vf[ky Hkkjrh; fgUnh lkfgR; lEesyu

शनिवार, रविवार 6–7 नवम्बर 2004

स्थान : हिन्दी भवन, लोहियाा नगर, गाजियाबाद

विचार गोष्ठियॉ, स्कूली बच्चों की प्रतियोगिता, सांस्कृतिक संध्या, काव्य निशा और अ.भा. लघु पत्र–पत्रिका एवं पुस्तक प्रदर्शनी तथा राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मानों का अलंकरण आप सादर आमंत्रित है।

उमाशंकर मिश्र, संयोजक/संपादक

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा विकास संगठन एवं यू.एस.एम. पत्रिका, 2बी, 136, नेहरु नगर, गाजियाबाद, 201001

फोनः 0120–2796982, 011–31125842

izfrHkk lEeku ;kstuk &2004

विगत वर्ष की भॉति इस वर्ष भी साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला संगम अकादमी द्वारा पत्र–पत्रिका, पुस्तकों एवं कला कृतियों की प्रदर्शनी व साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है. अकादमी मार्च 05 में अपने 24 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में चयनित पत्रकारों, कलाकारों व साहित्यकारों को क्रमशः 'पत्रकार श्री, कला श्री व साहित्य श्री सम्मानोंपाधि प्रदान करेगी. प्राप्त सर्व श्रेष्ठ पुस्तकों के लेखकों की क्रमशः पं. शिव शंकर शुक्ल स्मृति सम्मान, रोहित कुमार माथुर स्मृति सम्मान, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान, विवेकानन्द सम्मान,हिन्दी गरिमा सम्मान 2005 व हिन्दी प्रतिष्ठा सम्मान 2005 प्रदान किया जायेगा. पॉच विद्वानों को रजत मेडल भी प्रदान किया जायेगा. सभी सम्मान एक–एक हिन्दी भाषी व एक अहिन्दी भाषी विद्वानों को दिये जाएगें. मानदोपाधि विद्यावाचस्पति व विद्या वारिधि हेतु अलगसे जवाबी लिफाफा भेज कर फार्म मंगाये.

सम्मानोंपाधियॉ कृतियों पर प्रदान की जाती है. अतः लेखक गण अपनी श्रेष्ठ कृतियों की दो–दो प्रतियां, सम्पादक गण अपनी पत्र–पत्रिकाओं के तीन अंको की दो–दो प्रतियॉ, कलाकार या चित्रकार बन्धु स्व निर्मित चित्र या फोटो ग्राफ्स के अलग–अलग तीन चित्र भेजें. प्रतियोगी आलेख का विषय है– मानवीय विकास में धन अधिक उपयोगी या चरित्र?

सभी प्रतिभागी बन्धु अपना जीवन परिचय, एक छाया चित्र, दो पोस्टकार्ड 35 रुपये की डाकटिकट31 जनवरी 05 तक अवश्य भेज दे. सभी निर्णय विद्वानों की एक कमेटी द्वारा लिए जायेंगें. अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने हेतु जवाबी लिफाफा भेज कर फार्म मंगा सकेते है।.

वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', सचिव, साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला संगम अकादमी, परियॉवा, प्रतापगढ़, 229419

yxs gSa tyus nhi lka> ds] tyrk esjk euA
NksM+ vdsyh eq> fojgu dks] dgka x;s lktuAA

अब्बास खान, 'संगदिल

भारतीय प्रेस....

कई प्रमुख लोकतांत्रिक देशों में बने कानून जैसा नहीं है. इस संबंध में पारित विधेयक में मादक पदार्थ ब्यूरो, राजस्व खूफिया निदेशालय, रिसर्च एंड एनेलिसेज विग {रा}, खुफिया ब्यरो, केन्द्रीय सुूरक्षा बल तथा आर्थिक ब्यूरो सहित ग्यारह विभागों के अति संवेदनशील बताकर इसके दायरे से अलग रखा गया है. इसके साथ ही सूचना न देने वाले अधिकारी के लिये दंड का प्रावधानइस विधेयक में नहीं है. संसदीय लोकतंत्र की सेहत के लिए जरूरी इस अधिकार के बारे में स्वच्छता और आतंक की पर्याय पुलिस और मनमाने ढंग से कार्य करने की आदी अफसरशाही का व्यवहारिक रूख अपनाती है यह देखना बाकी है.

समाचारपत्रों को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तम्भ कहा जाता है. आजादी के बाद जब नौकरशाहों तथा राजनेताओं में भ्रष्ट होने की होड़ लग गयी तो उन्हें नियंत्रित रखने की बड़ी जिम्मेदारी प्रेस तथा न्यायपालिका पर आ गयी. न्यायपालिका तो भ्रष्ट नौकरशाहों तथा राजनेताओं पर अंकुश लगाने में अपनी भूमिका सही ढंग से निभा ले गयी किन्तु प्रेस अपनी भूमिका सही ढंग से निभा सका. भारत में जनप्रतिनिधियों, विशेषकर विधायकों तथा सांसदों को विशेषाधिकार हनन का आरोप लगाने जैसे कवच मिले हुए हैं. कई जगहों पर राजनेता—नौकरशाह प्रेस के खिलाफ एक जुट हो जाते हैं. प्रेस द्वारा सरकार के दोष तथा कमजोरियां बतोय जाने पर सरकार सेंसर व्यवस्था लागू करके, जलापूर्ति—विद्युत आपूर्ति बाधित कराके, अखबार के मालिक को घेराबंदी करके, पत्रकारों को फर्जी मुकदमों में फंसाकर उसे अपने फिलाफ न जाने के लिए बाध्य कराने का प्रयास करती है. जिला स्तर के प्रशासन के पास इसके लिए दूसरे तरह के हथकंडे होते हैं..

समाचार पत्र तथा इलेक्ट्रॅानिक मीडिया में जोर आजमाइश जारी है. इलेक्ट्रानि मीडिया ने समाचार पत्रों को प्रभावित जो जरूर किया है. किन्तु वह अखबारों की जगह नहीं ले सकती. जनता अखबारों को सार्वजनिक गजट मानती है. शहरों को छोड़ दें तो कस्बों तथा गांवों के लिये अखबार आज भी सब कुछ है. अखबारों तथा टी0 वी0 की होड़ ने कुछ मामलों में तटस्थता तथा दूरदर्शिता से काम नहीं लिया. गुजरात के मामले में दोनों ने नरेन्द्र मोदी को लगभग 'खलनायक' मान लिया. उनकी सही बात को भसी सुनना पसंद नहीं किया जिसने मोदी का काम और आसान कर दिया. भारत के अखबारों तथा टी0वी0 चैनलों ने गुजरात में मामले में अमरीकी प्रेस व इलेक्ट्रानिक मीडिया से सबक नहीं लिया. 11 सितंबर ी घटना में अमरीकी प्रेस तथा टी0वी0 ने प्रार्थना सभायें तो दिखाई किन्तु जली लाशे तथा ऐसी चीज नहीं दिखाई जिसमें हिंसा भड़कतीभारतीय प्रेस व इलेक्ट्रानिक मीडिया ऐस मौकों पर श्या. तो साम्प्रदायिक ताकतों के सामने घुटने टेक देता है या सिर्फ एक पक्ष की बाते प्रसारित करता है. पत्रकारों की सजग पीढ़ी को विश्वसनीयता बनाये रखने क लिये इस पर ध्यान देना होगा.

भारतीय प्रेस के सामने एक चुनौती विदेशी मीडिया की भी है. भारतीय पत्रकारों, राजनीतिज्ञों तथा बुद्धिजीवियों का विश्वास है कि यदि विदेशी समाचार कंपनियों को भारत में व्यवसाय करने की इजाजत मिलने से तो प्रेस की आजादी तथा देश के हितों को खतरा हो सकता है. वे भारजतीय लोकमत को अपने अनुसार बदलने का प्रयास कर सकते हैं. वैसे टी0वी0 के विदेशी चैनलों के माध्यम से किया जा रहा सांस्कृतिक हमला कम हानिकारक नहीं है. कुछ लोगों का यह सकते हैं. कि जब अन्य क्षेत्रों में विदेशी कंपनियों पर रोक नहीं लगायी तो विदेशी मीडिया पर रोक नहीं लगायी जानी चाहिए. इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में भारतीय समाचारपत्रों का स्तर अच्छा होगा. यह दृष्टिकोण व्यावहारिक नहीं है. विदेशी मीडिया के एक बार भारत में अपने क बादि उसके दुष्प्रभावों को रोक पाना संभव नहीं हो पायेगा और उसके दूरगामी घातक परिणाम होंगे.

कहने को 'वार्ता' तथा 'भाषा' हिन्दी समाचार एजेन्सियॉ हैं किन्तु उसमें अधिकतर यू0 एन0 आई0 और पी0टी0आई0 के अंग्रेजी से अनूदित समाचार पत्र होते हैं. जिन संस्थानों से हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के अखबार निकलते है वहां भी हिन्दी के पत्रकारासें से भेदभाव किया जाता है. उन्हें अंग्रेजी के पत्रकारों की तुलना में श्रेष्ठ नहीं माना जाता है. हिन्दी के प्रमुख समाचारपत्रों के संपादक तथा नीति निध ारिकों ने अपनी कुर्सी बचाने में ही समय व्यतीत किया. उन्होंने इस भेदभाव को दूर करने का प्रयास करना तो दूर अंग्रेजीके पत्रकारों के समक्ष आत्मसर्मपर्ण कर दिया. उनकी 'श्रेष्ठता' स्वीकार कर ली. हिन्दी के पत्रकारों में व्याप्त हीन भावना को दूर करने का कोई सार्थक प्रयास नहीं किया. आजादी के बाद अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी के अखबारों तथा पत्रकारों की बाढ़ सी आ गयी, किन्तु उन्हें अंग्रेजी के पत्र—पत्रिकाओं के मुकाबले मजबूती से खड़े रहने के लिए तैयार नहीं किया गया. इस कारण हिन्दी के अनेक प्रतिष्ठित समाचारपत्र—पत्रिकाओं सहित अधिकांश का प्रकाशन बंद हो गया. हिन्दी पत्रारिता को अन्य भाषाओं ककी पत्रारिता के समक्ष लाने तथा ऊपर ले जाने का काम सरकार या अन्य भाषाओं के अखबारों के पत्रकार नहीं करेंगे. इसके लिए एकजुट प्रयास हिन्दी के पत्रकारों को ही करे होंगे. हाल के दशक में हिन्दी पत्रारिता के लिए एक नई समस्या खड़ी हो गयी है. अपने गलत सही धंधों तथा हितों की रक्षा के लिए उप उद्योगपतियों ने भी अखबाासर खेल हीये जिनका पत्रकारिता से दूर—दूर तक कोइ्र रिश्ता नहीं था. ये गैर—पत्रकार अखबार—मालिक खुद संवपादक बन गयो अौर मनमनानी समाचार छापने लगे. इससे न केवल अखबारों से जुड़े श्रमजीवी पत्रकारों की गरिमा खत्म हो गयाभ कुल मिलाकर अखबार छोकटे ओ या बड़े, उनमें वही छपता है जो उनके मालिक चाहले हैं उनकके मालियकों के हिलएतों के अनुरूप उनकी प्रतिबद्धता बदलती रहती है. प्रख्यात पत्रकार अरूण शौरी का यह कथन अक्षरतः सत्य है— 'हम उतने ही स्वतंत्र हैं जितना हमारे माहिक चाहते हैं. उसका विरोश करने पर हम कने केवल बेरोजगार हो जाते है अपितु रोगार के अयोग्य बना दिये जाते हैं.' वसीम बरेलवी ने शायद य शेर पत्रकारों की विवशता पर ही लिख है—

बड़े शौक से तू मो घर जला, कोई आंच तुझ पे न आयेगी.

ये कलम किसी ने खरीद ली, ये जुबां किसी की गुलाम है.

दाऊजी का है कहना हर अनाथ और बृद्ध है मेरा अपना

स्नेहालय

(अनाथाश्रम एवं बृद्धाश्रम)

स्व0 गोरखनाथ दूबे पुस्कालय

सूचना और सहयोग आपका, परवरिश हमारी

ग्रामः टीकर पोस्टः टीकर (पैना) जिलाः देवरिया, उ0प्र0 में
निर्माणाधीन अनाथ एवं बृद्धा आश्रम में सहयोग करें

अगर आपकी नजर में कोई अनाथ 18 वर्ष से कम उम्र का दिखाई पड़ जाए, कोई बृद्ध/बृद्धा जिसका कोई सहारा न हो मिले कृपया हमें नीचे दिये पते पर सूचित करें

आपका छोटा सहयोग, आपका छोटा सा पैसा
कर सकता है आपके किसी भाई–बहन, बुर्जूग की सेवा

सहयोग के लिए हमें निम्न पते पर सम्पर्क करें या लिखें:

निवेदकः

दाउजी

पंजीकृत कार्यालयः
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
0532–3155949

श्री पी.एस.दूबे,
संतोष दूबे, सत्यानन्द(गुड्डू)
पुष्पेन्द्र(पप्पू), गिरिराजजी दूबे
ग्राम–टीकर, पोस्ट–टीकर,पैना,
देवरिया, उ.प्र.

सचिव/प्रबंधक
जी.पी.एफ.सोसायटी
स्नेहालय (अनाथ एवं बृद्धाआश्रम)

नोटः कृपया चेक/ड्राफ्ट जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से ही काटे, सहयोग राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुराण-साहित्य

1. अग्निपुराणम्	अनु0 श्री तारिणीश झा/डॉ0 घनश्याम त्रिपाठी	350.00
2. ब्रह्मपुराणम्	अनु0 श्री तारिणीश झा	500.00
3. ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (पूर्व भागः)	अनु0 श्री तारिणीश झा श्री बाबूराम उपाध्याय	275.00
4. ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (उत्तर भागः)	श्री तारिणीश झा श्री बाबूराम उपाध्याय	350.00
5. बृहन्नारदीयपुराणम् (पूर्व भागः)	अनु0 श्री तारिणीश झा	225.00
6. बृहन्नारदीय पुराणम् (उत्तर भागः)	श्री तारिणीश झा	125.00
7. मत्स्यपुराणम् (पूर्व भागः)	अनु0 श्री रामप्रताप त्रिपाठी	275.00
8. मत्स्यपुराणम् (उत्तरभागः)	अनु0 श्री रामप्रताप त्रिपाठी	150.00
9. मार्कण्डेय महापुराणम्	स्व0 पं0 कन्हैयालाल मिश्र	275.00
10. वायुपुराणम्	अनु0 श्री रामप्रताप त्रिपाठी	220.00
11. कूर्मपुराणम्	अनु0 श्री तारिणीश झा डॉ0 तमिस्रा चटर्जी	250.00
12. स्कन्दपुराणम् (केदार खण्ड)	अनु0 डॉ0 शिवानन्द नौटियाल	350.00
13. भविष्यमहापुराणम् (प्रथमखण्ड)	अनु0 श्री बाबूराम उपाध्याय	325.00
'' (द्वितीयखण्ड)	''	325.00
'' (तृतीयखण्ड)	''	325.00
14. वामनपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ0(श्रीमती) मालती त्रिपाठी	100.00
15. मूल रामायणम्	संपा0 डॉ0 प्रभात मिश्र 'शास्त्री'	5.00
16. पुराणों में गंगा	श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री	50.00

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें :

श्री विभूति मिश्र,
प्रधानमंत्री–हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
12 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद–3